Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

सोच्चा भगवाणुसासणं,
सच्चे तत्थ करेज्जुवक्कमं।

भगवान के अनुशासन को सुनकर सत्य को पाने का प्रयत्न करो।

• नई दिल्ली • वर्ष 23 • अंक 45 • 15 - 21 अगस्त, 2022 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 13-08-2022 • पेज : 16 • ₹ 10

सफलता का वरण करने के लिए करें सम्यक् पुरुषार्थ : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, ७ अगस्त, २०२२

जिनवाणी के व्याख्याता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में एक प्रश्न किया गया कि भंते! दो आदमी हैं। दोनों आपस में युद्ध करते हैं। दोनों समान हैं–उम्र में, त्वचा में और युद्ध सामग्री में। इन दोनों में से एक जीत जाता है और दूसरा हार जाता है, यह किस कारण से हुआ?

उत्तर दिया गया कि गौतम! सवीर्य जीतता है, अवीर्य पराजित होता है। पुनः पूछा गया कि यह किस कारण से तो उत्तर दिया गया कर्म के कारण। जिसके ये वीर्य बाह्य कर्म उदीरण नहीं होते हैं, उपशांत होते हैं, वह तो जीतता है। जिसके ये कर्म उदीरण हो जाते हैं, उपशांत नहीं होते वह व्यक्ति पराजित हो जाता है। अनेक बातों में समानता होने पर भी एक विजय को प्राप्त करता है। दूसरा पराजय को, इसमें कर्म का योगदान होता है।

जो शक्तिशाली होता है, तो अल्प सामग्री वाला भी जीत सकता है। जैसे राम ने रावण पर विजय प्राप्त कर ली। महान पुरुषों में जो सत्त्व होता है, शक्ति और पराक्रम होता है, उसमें क्रिया सिद्धि, सफलता रहती है। उपकरण तो कुछ गौण बात है। साधन सामग्री को किस तरह कलापूर्ण काम में लेना यह भी महत्त्वपूर्ण होता है। कर्म का अपना मुद्दा है।

भगवती सूत्र में वीर्य की बात आई है। हमारे जीवन में शक्ति का बहुत महत्त्व है। कमजोर होना एक तरह का अभिशाप है।

दुनिया में अनेक प्रकार के बल होते हैं। धन बल, जन बल, बुद्धि बल, मनबल, वचन बल और तन बल होते हैं। बल है, तो आदमी को बल का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। मेरे सामने प्रेक्षाध्यान के शिविरार्थी बैठे हैं। प्रेक्षाध्यान शक्ति जागरण का माध्यम बन सकता है। अध्यात्म की शक्ति का अध्यात्म में ज्यादा उपयोग लें। प्रेक्षाध्यान से आत्मबल, मनोबल जागृत करने का प्रयास किया जाए। चेतना की जागरण में प्रेक्षाध्यान का प्रयोग किया जाए तो प्रेक्षाध्यान भी एक शक्ति है। मैं चित्त शुद्धि के लिए प्रेक्षाध्यान का प्रयोग करूँ।

हमारे जीवन में भाग्य की भी अपनी भूमिका है। पुरुषार्थ का भी अपना महत्त्व है। आदमी को भाग्य भरोसे नहीं बैठना चाहिए। उद्यमी-पुरुषार्थी आदमी है, लक्ष्मी उसका वरण करती है। भाग्य भरोसे बैठने वाले कुत्सित आदमी हैं। भाग्यवाद को अलग रखकर अपनी शक्ति को पुरुषार्थ करो। भाग्य हमारा है, वैसा है। कर्तव्य हमारा यह है कि हम अच्छा पुरुषार्थ करते रहें। अच्छे पुरुषार्थ से भाग्य अनुकूल बन सकता है। मैं हूँ अपने भाग्य का निर्माता।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

मन में हिंसा की भावना रखना भी हिंसा के समान : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, ६ अगस्त, २०२२

अध्यात्म तत्त्ववेत्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में हिंसा के संदर्भ में जानकारी दी गई है। एक उदाहरण दिया गया है कि एक शिकारी शिकार करके अपना गुजारा चलाता है। वह मृगजीवी शिकारी जंगल में जाता है। वह शिकार के लिए कूट-पाश बाँधता है, तो उसे कितनी क्रियाएँ लगती हैं?

जैन वाङ्मय में एक क्रिया शब्द आता है। क्रियाओं के अनेक प्रकार हैं। पाँच प्रकार यहाँ प्रसंगों-पात्य है वे हैं–कायिकी, आधिकर्णिकी प्रावोशिकी, पास्तिपिनी और प्राणातिपात क्रिया। इन पाँच में से उस शिकारी के कितनी क्रियाएँ लग सकती हैं? उत्तर दिया गया कि हो सकता है, तीन ही क्रिया लगें, हो सकता है चार या पाँच क्रियाएँ भी लगें। प्रश्न है कि तीन क्यों, चार क्यों और पाँच क्यों?

इसका यह तात्पर्य है कि हिंसा है, एक तो हिंसा हो गई उसको हमने देख लिया। हिंसा करने से पूर्व प्रक्रिया भी होती है। ये पूर्व भूमिका हो गई कि मन में भाव, शरीर की चेष्टा फिर बाद में हिंसा होगी। ये क्रियाएँ पूर्व तैयारी है। शरीर की चेष्टा कायिकी, तैयारी करेगा वो आधिकार्णिकी, मन में हिंसा का भाव करेगा प्रादोशिकी क्रिया है। ये तीन क्रियाएँ पृष्ठभूमि में हो जाती है।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

आजादी का अमृत महोत्सव
75वें स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं
शुभेच्छु: अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स परिवार

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
15 - 21 अगस्त, 2022

✦ *हर व्यक्ति के मन में कुछ होने की कामना हो। इसके लिए कुछ अपेक्षानुसार कठोर जीवन जीने का अभ्यास करना चाहिए। जीवन में प्रतिस्रोतगामिता रहे।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

गर्भस्थ शिशु को सद्संस्कार देना होता है माता का दायित्व : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, ४ अगस्त, २०२२

सद्गुण रत्नाकर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने भगवती सूत्र की विवेचना करते हुए फरमाया कि प्रश्नोत्तर किया गया है कि गर्भस्थ बच्चा है, वो गर्भकाल के दौरान ही मर जाए तो क्या वह अजन्मा बच्चा नरक में जा सकता है क्या? उत्तर दिया गया कि गौतम! कोई-कोई नरक में पैदा हो सकता है, कोई-कोई नहीं भी होता है।

पुनः प्रश्न किया गया कि यह किस अपेक्षा से कहा गया है? उत्तर दिया गया कि कोई-कोई गर्भस्थ बच्चा जो संज्ञी पंचेंद्रिय तो है ही। उसके पास कोई वैक्रिय लब्धि है। ऐसी साधना या पिछले जन्म का योग है। वीर्य लब्धि भी उसके पास होती है, ऐसा गर्भस्थ बच्चा है, उसने सुन लिया या जान लिया कि शत्रु सेना आ रही है। वो जानकर यह सोचता है कि मैं शत्रु सेना से मुकाबला करूँ। मुकाबला करने के लिए वो अपने आत्म-प्रदेश को गर्भ से बाहर निकालता है और वैक्रिय समुद्घात से समबहत होता है। अपनी शक्ति से बहुरंगीणी सेना का निर्माण कर लेता है। निर्माण करके वो शत्रु सेना के साथ युद्ध शुरू कर देता है।

गर्भस्थ शिशु के उस समय हिंसा का भाव रहता है, सोचता है, मैं जीत जाऊँ, वह राज्य का आकांक्षी आदि अशुभ भाव होते हैं, उन भावों में वह इतना गहराई से चला जाता है। सारे अध्यवसाय, परिणाम, लेश्याएँ आदि अशुभ भावों में जुड़ गए हैं। इस बीच में वो शिशु मर जाता है। ऐसी भावना में मरा है, वो नरक में पैदा हो सकता है।

फिर प्रश्न किया गया कि भंते! क्या कोई गर्भस्थ शिशु मृत्यु को प्राप्त हो क्या वह देवलोक में पैदा हो सकता है? उत्तर दिया कि कोई-कोई गर्भस्थ शिशु मर करके देवलोक में पैदा हो सकता है।, कोई पैदा

नहीं भी हो सकता है। यह कैसे? वो जो गर्भस्थ शिशु है, पर्याप्त हो गया है, संज्ञी है और उसको किसी साधु का प्रवचन-वचन सुनने का मौका मिल गया, धार्मिक प्रवचन सुनने से धर्म के प्रति अनुराग हो जाता है। उसमें धर्म करने की भावना, मोक्ष की कामना, स्वर्ग की कामना हो जाती है। शुभ भाव उसमें आ जाते हैं। धर्म के भावों को गर्भस्थ शिशु आयुष्य पूरा कर देता है, तो वह मरकर के देवलोक में भी पैदा हो सकता है।

गर्भस्थ विज्ञान का सिद्धांत है कि गर्भज शिशु को भी पाप लग सकता है और पुण्य भी हो सकता है। गर्भस्थ शिशु के विकास, क्षमता और व्यवहार पर आधुनिक विज्ञान के क्षेत्र में भी अनुसंधान हुआ है कि गर्भस्थ शिशु गीतों को सुन लेता है, आवाजों को सुन लेता है, उनको वह जन्म के बाद भी पहचान लेता है। गर्भस्थ शिशु सपने भी देखता है। २८ सप्ताह का गर्भस्थ शिशु संगीत की थाप पर नाच भी सकता है। चरक संहिता में भी गर्भस्थ शिशु के विकास की बातें कही गई हैं।

गर्भस्थ का कितना विकास हो सकता है, यह भगवती सूत्र में विशेषतया बताया गया है। गर्भस्थ को अच्छे संस्कार देने की बात हमारे आगम से भी सिद्ध होती है। जन्म के बाद भी छोटे बच्चों में अच्छे संस्कार माता-पिता व ज्ञानशाला के द्वारा दिए जा सकते हैं। ज्ञानशाला संस्कार देने वाली, तात्त्विक-धार्मिक ज्ञान देने वाली सिद्ध हो रही है। स्कूल शिक्षा के अलावा ज्ञानशाला की शिक्षा भी उसे दी जाए तो अच्छे धार्मिक संस्कार बच्चे को मिल सकते हैं। साधु-साध्वियों के पास आने पर भी अच्छे संस्कार मिल सकते हैं।

मंत्र दीक्षा से संकल्प दिलाकर धार्मिक संस्कार दिए जा सकते हैं। जीवन-विज्ञान से भी अच्छे संस्कार मिल सकते हैं। बाल पीढ़ी को अच्छे संस्कार मिलने से वो आगे जाकर अच्छे नागरिक बन सकते हैं। विद्या-संस्थानों से भी अच्छे संस्कार दिए जाएँ। विनम्रता, अहिंसा, ईमानदारी से संस्कार दिए जाएँ। माता गर्भकाल में जागरूक रहकर शिशु को अच्छे संस्कार दे।

भगवती सूत्र में यह भी बताया गया है कि जो संतान होती है, उसको तीन मातृ अंग प्राप्त होते हैं—मांसा, शोणित और मस्तिस्क की मज्जा। पितृ अंग के रूप में भी तीन चीजें प्राप्त होती हैं, अस्थि, मज्जा, केश, रोम नख आदि संतान को प्राप्त होता है। इस तरह शरीर विज्ञान की बातें बताई गई हैं। भगवती सूत्र में अनेक विषयों का वर्णन दिया गया है, इनको पढ़कर जानकारियाँ की जा सकती हैं। वैराग्य वृत्ति और धर्म की प्रेरणा भी प्राप्त की जा सकती है।

कालू यशोविलास को व्याख्यायित करते हुए महातपस्वी ने फरमाया कि पूज्य कालूगणी छापर से सुजानगढ़ पधारते हैं, वहाँ छः दीक्षाएँ होती हैं। वि०सं० १९६८ का मर्यादा महोत्सव लाडनूं में भी दीक्षाएँ हो रही हैं। वहाँ से रतनगढ़ होकर वि०सं० १९६९ का चतुर्मास करने चूरू पधारते हैं। वहाँ भी दीक्षाएँ हुई। वहाँ से सरदारशहर होते हुए बीदासर मर्यादा महोत्सव हो रहा है। १९७० का चतुर्मास ठा० आनंद सिंह जी की अर्ज पर लाडनूं हो रहा है। जगह-जगह दीक्षाएँ हो रही हैं। जन कल्याण और आत्मकल्याण कर रहे हैं।

जर्मनी के वयोवृद्ध विद्वान जैकोवी जिन्होंने तीन आगमों का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किया था। वे १८ भाषाओं के जानकार भी थे, वे भारत आए। भारतीय धर्मों की जानकारी कर रहे हैं। श्रावक समाज भी उनसे मिलकर पूज्य कालूगणी से संपर्क करवाने का प्रयास कर रहे हैं।

तेरापंथ महिला मंडल, छापर ने त्याग का गुलदस्ता-संकल्पों की आध्यात्मिक भेंट श्रीचरणों में अर्पित किया। पूज्यप्रवर ने आशीर्वाद देकर संकल्प करवाए। दीक्षा प्रदाता ने ८ दिसंबर सिरियारी में मुमुक्षु दक्ष जो सरदारशहर से है तथा पूज्यप्रवर की संसारपक्षीय बहन का पौत्र है को दीक्षा प्रदान करने की घोषणा करवाई।

जसोदा देवी चौपड़ा पचपदरा निवासी जिनकी एक पुत्री तो दीक्षित है और दो पुत्रियाँ संस्था में अध्ययरत हैं, ने २३ की तपस्या के प्रत्याख्यान पूज्यप्रवर से ग्रहण किए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

गर्भकाल में माँ की जागरूकता से शिशु का आध्यात्मिक विकास होता है : आचार्यश्री महाश्रमण

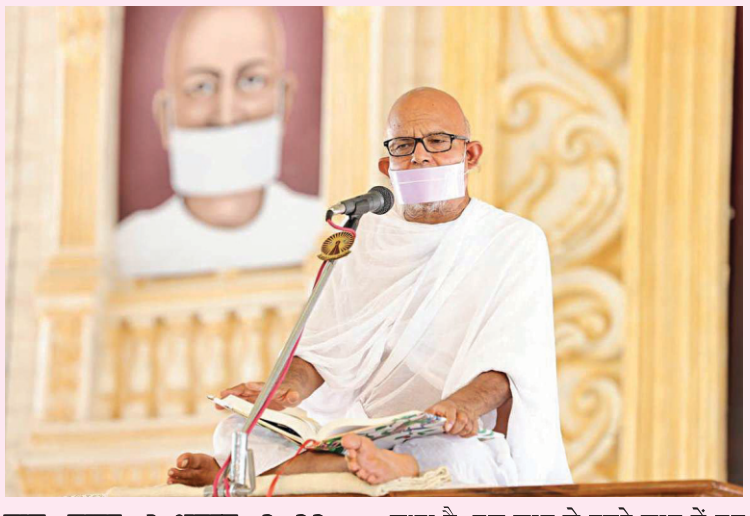

ताल, छापर, ३ अगस्त, २०२२

नमस्कार महामंत्र के मध्यम पद में विराजित आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में प्रश्न किया गया है कि जीव गर्भ में जाता है, एक जन्म से दूसरे जन्म में तब वह सइंद्रिय जाता है या अनिन्द्रिय जाता है।

पुनर्जन्म के संदर्भ में देखें कि जीव जब गर्भ में आता है, शरीर का निर्माण होता है तब शरीर का निर्माण कर्म के निमित्त से होता है, अथवा भूत मात्र के संयोग से होता है। यह प्रश्न प्राचीन काल में भी चर्चित रहा है। वात्स्यायन के अनुसार कर्म के फल के द्वारा शरीर का निर्माण होता है। जैन दर्शन भी कर्म से शरीर का निर्माण होता है, इस सिद्धांत को मानने वाला है।

दो बातें हैं, एक अपेक्षा से वह जीव सइंद्रिय जाता है और दूसरी अपेक्षा से अनिन्द्रिय जाता है। इंद्रियाँ दो प्रकार की हैं—द्रव्येंद्रियाँ और भावेंद्रियाँ। द्रव्येंद्रियाँ पौद्गलिक हैं। चैतसिक हैं, वो भावेंद्रियाँ हैं। मृत्यु के बाद जीव जब एक जन्म से दूसरे जन्म में जाता है, तो चेतना में क्षयोपशम रूप में जो भावेंद्रिय है, उसको साथ लेकर जाता है।

पुनर्जन्म के संदर्भ में दूसरा प्रश्न किया गया कि वह जो जीव अगले जन्म में गर्भ में जाता है, तब वो जीव सशरीर जाता है या अशरीर जाता है। उत्तर दिया गया एक अपेक्षा से तो सशरीर जाता है, दूसरी अपेक्षा से अशरीर जाता है। शरीर पाँच हैं—औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तेजस और कार्मण। पहले तीन शरीर स्थूल है। इन तीनों को साथ लेकर कोई आगे नहीं जाता। परंतु तेजस शरीर जो सूक्ष्म है तथा कार्मण शरीर जो सूक्ष्मतर है, ये दो शरीर अगले जन्म में आगे साथ में भी जाते हैं।

उत्पत्ति के संदर्भ में तीसरा प्रश्न किया गया है कि जैसे मनुष्य के रूप में कोई जीव पैदा हो रहा है, तो पैदा होते ही जीव कौन सा आहार ग्रहण करता है। उत्तर दिया गया गौतम! वह जीव सबसे पहले माता का ओज पिता का शुक्र इन दोनों से मिश्रित आहार ग्रहण करता है। चौथा प्रश्न किया गया कि वह जीव गर्भ में रहेगा तब कौन सा आहार ग्रहण करेगा? गर्भस्थ जीव की जो माता है वह नाना प्रकार की रस प्रवृत्तियों का आहार लेती है, उसके एक देश का वह गर्भस्थ शिशु आहार के रूप में ग्रहण कर लेता है।

यह बताया गया है कि जो गर्भिणी माँ भोजन करती है, वह आहार माता के शरीर में तीन भागों में विभक्त हो जाता है। एक भाग माँ की शरीर की पुष्टि के लिए, दूसरा भाग माँ के दूध बनाने के काम में आता है। भोजन का तीसरा हिस्सा जो गर्भस्थ बच्चा है, उसकी पुष्टि के लिए काम आता है।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

गर्भकाल में माँ की जागरूकता से शिशु का आध्यात्मिक...

(पृष्ठ दो का शेष)

पाँचवाँ प्रश्न किया गया है कि जो गर्भस्थ बच्चा है, उसके मल-मूत्र, कफ, श्लेष्य होते हैं या नहीं। उत्तर दिया गया कि ऐसा नहीं होता। क्योंकि वो जो बच्चा आहार लेता है, वह वो अपने इंद्रियों के रूप में अस्थि, मज्जा, केश, रोम, नख के रूप में पय कर लेता है। छठा प्रश्न किया गया कि वो बच्चा मुख से आहार लेता है या नहीं। उत्तर दिया गया गर्भस्थ बच्चा मुँह से आहार लेने में सक्षम नहीं होता है? वो बच्चा समग्र शरीर से आहार ग्रहण करता है।

माँ और बच्चा दोनों जुड़े हुए हैं। दो नाड़ियाँ होती हैं—मातृ जीव रस हरणी और पुत्र जीव रस हरणी। गर्भस्थ की नाभि में नाड़ी लगी रहती है। नाड़ी में अपरा-जरायू लगी रहती है, उससे उस बच्चे को आहार की सप्लाई होती रहती है। ये कई जिज्ञासाएँ भगवती सूत्र में की गई है, गौतम को उनका उत्तर भी दिया गया है। आयुर्वेद में भी ऐसी बातें मिलती हैं। यह पुनर्जन्म और गर्भस्थ बच्चे के जन्म का सिद्धांत है।

एक महत्त्वपूर्ण बात होती है कि गर्भस्थ बच्चा है, उसमें अच्छे संस्कारों का निर्माण कैसे हो सकता है। ऐसा बताया गया है कि माँ गर्भस्थ अवस्था में होती है, तो माँ को जागरूकता रखनी होती है कि गर्भकाल में माँ उसको अच्छा शिक्षण देने का प्रयास करें, अच्छी मंगलकामनाएँ करें। सिद्धोसी, बुद्धोसी, निरंजनोसी। मेरा बच्चा अच्छा विनय-संस्कार वाला रहे। माँ का एक दायित्व होता है कि मैं बच्चे को जन्म के बाद भी अच्छे संस्कार दूँ और गर्भकाल में बच्चे को अच्छे संस्कार दूँ।

कालू यशोविलास आख्यान की विवेचना करते हुए महामनीषी ने फरमाया कि पूज्य कालूगणी के करकमलों द्वारा सरदारशहर में कई दीक्षाएँ हुई हैं। उसके बाद चुरू, रतनगढ़, राजलदेसर, सुजानगढ़ में भी कई दीक्षाएँ हुई हैं। लघु सिंह निष्क्रिडित तप करने वाली कई साध्वियाँ हुई हैं। वि०सं० १९६८ का चतुर्मास में हो रहा है, वहाँ भी कई बार अनेक दीक्षाएँ हुई हों बाद में राजलदेसर में घोर तपस्वी मुनि सुखलालजी की दीक्षा हुई है। छापर में भी दीक्षा हुई है। पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

साध्वीवर्याजी ने नमस्कार महामंत्र के चौथे पद का विवेचन करते हुए कहा कि जिनके पास से श्रुत ज्ञान मिलता है, वो उपाध्याय होते हैं। उपाध्याय का मतलब ज्ञान को नमस्कार किया गया है। ज्ञान के दो प्रकार—लौकिक और लोकोत्तर होता है। लोकोत्तर ज्ञान आत्मा और अध्यात्म का बोध कराने वाला होता है। उपाध्याय के २५ गुण बताए गए हैं। जैन श्वेतांबर तेरापंथ में आचार्य ही उपाध्याय का पद संभालते हैं। आचार्य ही व्यवस्था और अध्ययन अध्यापन का कार्य करते हैं।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

मन में हिंसा की भावना रखना भी हिंसा के ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अब वो मारने वाला है, वो यदि बाण को छोड़े, मृग को थोड़ा सा लगा, मृग मरा नहीं तो थोड़ी तकलीफ हुई वह परितापिनी क्रिया हो जाती है। अगर वो मृग मर गया तो पाँचवीं प्राणातिपात क्रिया हो जाती है। इस तरह तीन, चार या पाँच क्रियाएँ हो सकती हैं। प्राण वध करना तो हिंसा है ही पर कायिक या अन्य क्रियाएँ भी हिंसा ही है।

हिंसा के संदर्भ में समस्या है कि शिकारी ने अस्त्र-शस्त्र तैयार किए हैं, मारा नहीं है, वह हिंसा है या नहीं। समस्या का समाधान दिया गया कि हिंसा की पूर्व तैयारी हिंसा ही है। हिंसा एक परंपराबद्ध प्रवृत्ति है। ये हिंसा की सहायक कड़ियाँ हैं, जो हिंसा के सहायक तत्त्व हैं।

यहाँ एक प्रश्न और किया गया है कि शिकारी ने मृग को मारने के लिए बाण ताण रखा है। इतने में उस शिकारी को दूसरा आदमी गोली मार देता है। जिससे शिकारी मर जाता है, साथ में शिकारी के हाथ से बाण भी छूट जाता है और मृग भी मर जाता है। शिकारी मरा उसकी हिंसा तो गोली चलाने वाले को लगी पर बाण से जो मृग मरा उसकी हिंसा किसे लगेगी?

यहाँ शास्त्रकार कहते हैं कि धनुर्धर को जिस आदमी ने मारा उसके मन में मृग को मारने का कोई संकल्प नहीं था, न उसने मृग को देखा भी होगा। दूसरा आदमी मृग का हिंसक नहीं है। वह धनुर्धर ही मृग का हिंसक है, कारण उसी का लक्ष्य था मृग को मारना। उसी के हाथ से वो बाण छूटा है। यह क्रियमान कृति हिंसा का कार्य शुरू हो गया था और हिंसा हो भी गई है। यह एक मारने की भावना उसमें थी। वे हिंसा के बारे में सूक्ष्म बात बताई गई है।

एक बात और है कि किसी ने बाण छोड़ा और वह मृग के लग भी गया पर मृग मरा नहीं है, व्यवहार में अगर वह प्राणी छः महीने के भीतर मर जाए तो उसके पाँचवीं क्रिया लग जाएगी। अगर वह मृग छः महीने के बाद मरता है, तो वह हिंसा का पाप बाण फेंकने वाले को नहीं लगेगा।

साधु के पास लब्धि है, उसने प्रयोग किया कि सेना को मारना उसने किसी आदमी पर प्रहार किया और वह आदमी छः महीने में मर जाए तो साधु को नई दीक्षा आए और अगर वह छः महीने बाद मरे तो साधु का दोष नहीं है, साधु को नई दीक्षा नहीं आए। ये ऐसी सूक्ष्म बात है। हमारी सामान्य सी परंपरा रही है कि कोई साधु संघ में अलग हो। पर साधु वेष में है, साधुपन पाल रहा है, अगर वो छः महीने के भीतर ही संघ में आना चाहे तो नई दीक्षा दिए बिना ही लिया जा सकता है। छः महीने बाद संघ में आए तो नई दीक्षा लेनी होती है। उसमें अपवाद-परिवर्तिन हो सकता है। ये सारी व्यवहार की बातें हैं।

भगवती सूत्र में हिंसा के बारे में गहरा ज्ञान दिया गया है कि आदमी का इरादा क्या है? उस इरादे के संदर्भ में ही हिंसा को देखना होता है। कोर्ट में भी यही दंड संहिता है कि मारने वाले का इरादा क्या था। ये कुछ बौद्धिकतापूर्ण, कुछ अध्यात्म और हिंसा की एक गहन बातें हैं। सारांश यह है कि हमारे मन में हिंसा का इरादा हीन बने। न मारना अलग बात है, पर संकल्प भी न हो। यह अहिंसा की अच्छी कोटि की साधना हो सकती है।

परम पावन ने कालू यशोविलास का विवेचन करते हुए फरमाया कि बाल दीक्षा के बारे में जोधपुर राज्य में बात आई है कि नाबालिग दीक्षा न हो। लोगों की राय लेने के लिए तीन महीने का समय दिया गया है। तेरापंथ समाज में चिंतन किया गया कि ये बात तो ठीक नहीं है। बचपन में ही अध्ययन अच्छा हो सकता है। अपने तो आगम में तो बात आई हुई है कि ८ वर्ष का दीक्षा ले सकता है। समाज के प्रमुख श्रावक मिलकर जोधपुर जाकर मुख्य न्यायाधीश से बात करते हैं। तेरापंथ की दीक्षा प्रणाली सुनकर मुख्य न्यायाधीश व्यथित हो जाते हैं। वे आश्वासन भी देते हैं। एक बार वह आदेश स्थगित कर दिया जाता है। पूज्य कालूगणी लाडनूं चातुर्मास पूर्ण कर छापर पधार जाते हैं। यहाँ संस्कृत का अभ्यास किया जा रहा है।

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

साध्वीवर्या जी ने कहा कि प्राणी दुर्गति में न जाए इसके लिए पाप कर्म से विरत होना पड़ेगा। पाप से बचाने वाला मार्ग है—संयम। संयम दो प्रकार का होता है—संयमासंयमी व संयमी। नमस्कार महामंत्र में णमो लोए सव्व साहूणं पाँचवाँ पद है। शुद्ध साधु हो पाँचवें पद का अधिकारी हो सकता है। जो पाँच महाव्रतों का निष्ठापूर्ण पालन करता है, वह शुद्ध साधु होता है।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि द्वेष पहले समाप्त होता है, बाद में राग समाप्त होता है। राग समाप्त होते ही आदमी वीतराग बन जाता है।

अभिनंदन समारोह का आयोजन

कानपुर।

साध्वी डॉ० पीयूषप्रभाजी आदि ठाणा-४ के कानपुर चातुर्मास मंगल प्रवेश के उपलक्ष्य पर एक अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया।

साध्वी डॉ० पीयूषप्रभाजी ने कहा कि आज का भव्य स्वागत हमारा नहीं है, बल्कि यह स्वागत है भारत की संत परंपरा का, त्याग का स्वागत है, आचार्यश्री महाश्रमण जी के निर्देश का स्वागत है।

आज का अभिनंदन तभी सार्थक होगा जब जीवन में कुछ परिवर्तन आएगा। अपनी जीवनशैली, दिनचर्या को व्यवस्थित कर समय का नियोजन कर, संत, दर्शन, प्रवचन श्रवण कर ज्ञान दर्शन तप की आराधना करनी है।

साध्वी दीप्तियशा जी ने कहा कि १० वर्षों के बाद मिले चातुर्मास का लाभ १० गुना ज्यादा लेना है। स्वरूप नगर में धर्म अध्यात्म का स्वरूप निखर जाए। साध्वी डॉ० पीयूषप्रभाजी द्वारा रचित गीत का संगान साध्वी भावनाश्री जी, साध्वी सुधाकुमारी जी और साध्वी दीप्तियशा जी ने किया। अभिनंदन समारोह मुख्य अतिथि कानपुर शहर की महापौर प्रमिला पांडे जी ने कहा कि धर्म का श्रवण करना, संत दर्शन अति दुर्लभ है। मुझे बचपन से ही संत दर्शन का शौक रहा है।

अभिनंदन समारोह में सभा मंत्री संदीप जम्मड़, तेयुप अध्यक्ष दिलीप मालू, तेममं अध्यक्षा शालिनी बुच्चा, सभा के पूर्व अध्यक्ष गणेशमल जम्मड़, जैन संघ के मंत्री त्रिभुवन जैन, ऋतु जैन, अवनी सुराणा, ज्योति दुगड़, तेयुप, तेममं आदि ने गीत, वक्तव्य द्वारा साध्वीवृंद का स्वागत किया। नेहा सुराणा ने साध्वीवृंद का परिचय दिया। ज्योति भूतोड़िया, प्रियंका ने सुंदर गीत प्रस्तुत किया। महापौर का साहित्य द्वारा अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम का संचालन प्रियंका और संदीप ने किया।

सफलता का वरण करने के लिए करें...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

पुरुषार्थ करने पर भी कभी सफलता नहीं मिलती है, दोबारा फिर पुरुषार्थ करो। असफलता से हर बार निराश नहीं होना चाहिए। हर असफलता एक नई सफलता प्राप्त कराने में निमित्त बन सकती है। अगर उस असफलता से कोई सबक ले लिया जाए, आदमी को झट-पट निराश नहीं होना चाहिए। चलते-चलते मानो गिर ही गए, पर खड़े होकर ठीक हो जाएँ, आगे चलें, मंजिल मिल जाएगी। जीवन में आदमी को वीर्यवान रहना चाहिए।

आदमी को सम्यक् पुरुषार्थ-विवेकपूर्ण पुरुषार्थ करना चाहिए। यह एक प्रसंग से समझाया कि पुरुषार्थ ऐसा करना चाहिए, जिससे सफलता मिल सके। हर चीज पुरुषार्थ से मिल ही जाएगी, कहना मुश्किल है। एक सीमा तक पुरुषार्थ किया जा सकता है। अभवी को भवी नहीं बनाया जा सकता है। जो सवीर्य है, वो जीतता है। हमें अपने जीवन में शक्ति का सम्यक्त्व, निरवद्य, अच्छे क्षेत्र में उपयोग करना चाहिए। वो उस शक्ति की अच्छी सार्थकता हो सकती है।

परम यशस्वी ने कालू यशोविलास का विवेचन करते हुए फरमाया कि पूज्य कालूगणी सुजानगढ़ में चतुर्मास करा रहे हैं। दीक्षा भी हुई है। मेवाड़ के लोग अर्ज करने आए हैं कि गुरुदेव अब मेवाड़ पर भी महर करवाओ। मेवाड़ की धरती बाट जोव रही है। आप ठाट-बात से पधारो। थली में आप इतने विराज गए हैं। कालूगणी ने मेवाड़ पधारने की स्वीकृति प्रदान करा देते हैं। छोगांजी कालूगणी से शिकायत रूप में अर्ज कर रहे हैं कि मैं कैसे मेवाड़ जा पाऊँगी। मैं तो जीवन के अंतिम पड़ाव में हूँ। पुनः आपके दर्शन कब होंगे। कालूगणी छोगांजी को आश्वासित कर रहे हैं कि जल्दी ही आकर दर्शन देने का भाव है।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने कहा कि कामनाएँ शल्य के समान हैं। काम भोग भी विष के समान है। विषय की जो विषमता है, वह विष है। विषय संसार भ्रमण का कारण है। विष तो एक जन्म में आदमी को नष्ट कर सकती है। इन कामनाओं एवं विषय व काम भाग की इच्छा मात्र करने से आदमी दुर्गति को प्राप्त हो जाता है। काम के सेवन से प्राणी की बुद्धि भी नष्ट हो जाती है। जो आदमी निरंतर काम-भोग का सेवन करता है या इच्छा करता है, तो उसमें आसक्ति पैदा हो जाती है। क्रोध पैदा हो जाता है, जिससे व्यक्ति में मूढ़ता पैदा होती है।

पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ नागौर जिला प्रमुख भागीरथ चौधरी पधारे, उन्होंने अपनी भावना अभिव्यक्त की। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया। पूज्यप्रवर ने सरदारशहर के ८ वर्ष के लक्षित बरड़िया को अठाई का प्रत्याख्यान करवाया।

समणी कुसुमप्रज्ञा जी बीकानेर से लेक्चर देकर आए हैं, अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

✦ *अहिंसा की साधना के लिए अपेक्षित है व्यक्ति अपने क्रोध पर नियंत्रण का प्रयास करे।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

माँ का सम्मान संस्कृति का सम्मान है

कटक, उड़ीसा।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल द्वारा 'माँ-बेटी शिविर' का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि ऊपर जिसका अंत नहीं उसे आसमाँ कहते हैं। जहाँ में जिसका अंत नहीं उसे माँ कहते हैं। माँ शक्ति है, भक्ति है, अभिव्यक्ति है। माँ के उपकार को कभी नहीं भूलना चाहिए। बेटी माँ की बात माने और माँ बेटी को सही राह दिखाए। माँ बेटी के विचारों व भावनाओं का भी सम्मान करे। बेटी माँ के प्रति सहयोग भावना का विकास करें।

इस अवसर पर मुनि परमानंद जी ने कहा कि माँ एक ऐसा शब्द है, जिससे इंसान अपना रिश्ता शुरू करता है। माँ शिक्षिका है, विद्यालय है। माँ का दिल दरियादिल होता है। बेटी घर-परिवार की शान है।

कार्यक्रम का शुभारंभ पूजा चोरड़िया के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा हीरा बैद ने किया। शिविर में लगभग ८० से अधिक माँ-बेटियाँ सम्मिलित हुई।

रूपांतरण शिल्पशाला का आयोजन

तिरुपुर।

अभातेममं के तत्त्वावधान में तेममं द्वारा रूपांतरण शिल्पशाला के अंतर्गत 'जानें, समझें और करें प्रतिक्रमण, ना हो हमसे फिर कोई अतिक्रमण' पर कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यशाला का प्रारंभ प्रेरणा गीत द्वारा किया गया।

प्रतिक्रमण विषय पर बहनों द्वारा गीत की प्रस्तुति दी गई। अध्यक्षा सीमा सामसुखा ने सभी का स्वागत किया।

कार्यशाला की मुख्य वक्ता उपासिका संजू दुगड़ रही। उन्होंने बताया जाने-अनजाने हमारे द्वारा किए गए कृत पापों की आलोचना करना प्रतिक्रमण कहलाता है। प्रतिक्रमण हमारी आत्मा का स्नान है, आत्मा को निर्मल बनाने के लिए प्रतिक्रमण रोजाना करना चाहिए।

प्रतिक्रमण के छह आवश्यकों के महत्त्व एवं लाभ के बारे में प्रेरणा कोठारी, रंजना भंसाली, रेखा चोरड़िया, श्वेता कोठारी, नीता सिंघवी ने विस्तार से बताया। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार ज्ञापन मंत्री प्रीति भंडारी ने किया।

प्रतिक्रमण को अपनाएँ

भीलवाड़ा।

अभातेममं के निर्देशन में तेममं द्वारा डॉ० साध्वी परमयशा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन नागौरी गार्डन में रूपांतरण शिल्पशाला 'प्रतिक्रमण' जाने, समझे और करें प्रतिक्रमण, न हो हमसे फिर कोई अतिक्रमण' आयोजित की गई। डॉ० साध्वी परमयशाजी ने कहा कि प्रतिक्रमण हमारा कल्याण मित्र बनकर हमारे जीवन को निखारता है। प्रतिक्रमण आध्यात्मिक विकास एवं जीवन उत्थान की पुंजी है।

साध्वीश्री जी ने कहा कि प्रतिक्रमण शुद्ध स्पष्ट लयबद्ध उच्चारण और अर्थ बोध के साथ करना चाहिए। कार्यक्रम में तेममं अध्यक्षा मीना बाबेल ने उपस्थित श्रावक समाज का स्वागत करते हुए प्रतिक्रमण की महत्ता बताई। महिला मंडल ने सुमधुर सामूहिक गीतिका द्वारा मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत की। साध्वीवृंद ने प्राकृत, संस्कृत, हिंदी और अंग्रेजी इन चार भाषाओं में मधुरिम स्वर लहरियों के साथ गीत का संगान किया।

कार्यक्रम का संचालन रेणु चोरड़िया ने किया। आभार ज्ञापन प्रेक्षा मेहता ने किया।

दंपति कार्यशाला का आयोजन

चेन्नई।

तेममं के तत्त्वावधान में और साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में आयोजित दंपति कार्यशाला को संबोधित करते हुए साध्वीश्री जी ने कहा कि लक्ष्य के साथ जीना आनंद प्रदान करता है। पति-पत्नी परिवार की धूरी और केंद्र होते हैं। बिना सशक्त दंपति रूपी पहिए के परिवार रूपी रथ चल नहीं सकता।

एक-दूसरे का व्यवहार सामंजस्यपूर्ण और सौहार्द भरा हो। अपने मधुर अनुभवों को शेयर करें और अच्छी जिंदगी के लिए सोच-समझकर कदम बढ़ाएँ।

साध्वीश्री जी ने कहा कि आनंद में जीवन जीने के लिए पहला महत्त्वपूर्ण सूत्र है एक-दूसरे को सहन करें। एक-दूसरे को सहयोग करें, खुशहाली बाँटें, दंपतियों की जिम्मेदारी है अपनी भावी पीढ़ी को संस्कारी बनाएँ।

एक-दूसरे की समस्याओं को समाहित करना सीखें, हौसलों को कमजोर ना होने दें। पारस्परिक गुणगान भी रिश्ते में मधुरता बनाए रखता है। कार्यशाला का प्रारंभ महिला मंडल के संगान से हुआ। स्वागत भाषण महिला मंडल की अध्यक्ष पुष्पा हिरण ने किया। मुख्य वक्ता अनीता चोपड़ा और बबीता चोपड़ा ने पारस्परिक मनोरंजन वार्तालाप के द्वारा कुछ टिप्स देकर अपनी बात साझा की।

साध्वी डॉ० राजुलप्रभाजी ने कहा कि प्राप्त भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति को हावी ना होने दें। साध्वी सिद्धियशा जी ने कहा कि दंपति परस्पर एक-दूसरे को सहन करें, रिश्तों में कड़वाहट की दीमक ना लगने दें। दीपक बनकर रोशन करें। साध्वीवृंद द्वारा गीत की प्रस्तुति दी गई। साध्वी शौर्यप्रभाजी ने कार्यक्रम के प्रथम सत्र का संचालन किया।

दूसरे सत्र का संचालन तेरापंथ महिला मंडल मंत्री रीमा सिंघवी ने किया। कार्यक्रम की संयोजिका रानी मांडोत एवं सुमन बोहरा का कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग रहा। सभी पदाधिकारीगण एवं कार्यसमिति सदस्य का भी भरपूर सहयोग मिला। धन्यवाद ज्ञापन प्रचार-प्रसार मंत्री रानी मांडोत ने किया।

अभिनव ग्रुप अंताक्षरी का आयोजन

कटक, उड़ीसा।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तेममं द्वारा अभिनव ग्रुप अंताक्षरी का आयोजन किया। जिसमें ६ ग्रुपों में कुल १६ प्रतियोगियों ने हिस्सा लिया।

मुनि परमानंद जी ने विभिन्न राउंड के माध्यम से अंताक्षरी को व्यवस्थित रूप प्रदान किया। अंताक्षरी भाग लेने वाले प्रतियोगियों ने अंताक्षरी में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। अंताक्षरी में मनोहरी देवी कोचर, मंजु सेठिया, संपत देवी दुगड़ का ग्रुप प्रथम स्थान पर रहा। द्वितीय स्थान पर नूतन विनायकिया, धनी देवी बरड़िया, सरिता दुगड़ का ग्रुप रहा और तृतीय स्थान पर मंजु लीला देवी सिंधी, शांति देवी चोरड़िया, सुमन बेताला का ग्रुप रहा। सभी को तेममं द्वारा पुरस्कृत किया गया।

स्वागत भाषण तेममं की अध्यक्षा हीरा बैद ने व आभार ज्ञापन कविता चोपड़ा ने किया।मुनि जिनेश कुमार जी ने अंताक्षरी का शुभारंभ करते हुए सभी को मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

प्रतिक्रमण कार्यशाला का आयोजन

मदुरै।

तेरापंथ महिला मंडल द्वारा प्रतिक्रमण कार्यशाला का मुनि तीर्थनंदन विजय जी म०सा० के सान्निध्य में आयोजन आराधना भवन मदुरै में किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ मुनिश्री ने नमस्कार महामंत्र के स्मरण से किया। मुनिश्री ने बताया कि प्रतिक्रमण व्रतों में हुए अतिचार, व्रतों में लगे दोषों की आलोचना करने का तथा आत्मा के शुद्धिकरण का अचूक उपाय है। बारह व्रती श्रावक के लिए प्रतिक्रमण अनिवार्य है। प्रतिक्रमण की आवश्यकता को समझकर उसका अभ्यास व्यक्ति के संयम को गति देता है। साधु के लिए जिस प्रकार दिन में दो बार प्रतिक्रमण करने का विधान है वैसे ही श्रावक के लिए व्रतों में लगे दोषों को दूर करने के लिए प्रतिक्रमण अत्यंत उपयोगी है।

उन्होंने प्रतिक्रमण की महत्ता, प्रतिक्रमण क्यों, विषय पर जानकारी प्रदान की। सूत्र के अर्थ एवं भाव, लेय के बारे में भी बताया, प्रेरणा गीत के पश्चात तेरापंथ महिला मंडल की मंत्री दीपिका फूलफगर ने आभार ज्ञापन किया। श्रावकों की उपस्थिति में कार्यशाला सफल रही।

आध्यात्मिक भेंट अर्पित गुरु चरणों में

छापर।

तेममं के तत्त्वावधान में पूज्यप्रवर के स्वागत-अभिनंदन के लिए लंबे समय से बहनें त्याग प्रत्याख्यान, संकल्प रोजाना कर रही थीं, गुरुदेव ने कोयंबटूर मर्यादा महोत्सव में जब छापर का चातुर्मास फरमाया तो यहाँ के प्रवासी हो या निवासी सभी के मन में बहुत उल्लास और उमंग थी कि हम गुरुदेव का स्वागत कैसे करें, आध्यात्मिक गतिविधियों के साथ करें, इसी कड़ी में छापर तेरापंथ महिला मंडल ने जप-तप संकल्प के साथ रोजाना का एक संकल्प का शुभारंभ किया।

संकल्प ६ जुलाई से पूज्यप्रवर के प्रवेश तक चला, जिसमें सैकड़ों भाई-बहनों ने रोजाना प्रत्याख्यान किया।

आचार्यश्री महाश्रमण जी ने महती कृपा करके फरमाया कि छापर महिला मंडल ने संकलपों की भेंट अर्पित की है, बहुत अच्छी बात है। छापर की बहनें तत्त्वज्ञान से भी ज्यादा से ज्यादा जुड़ें और अपना आध्यात्मिक विकास करें।

महिला मंडल अध्यक्ष सरिता सुराणा ने भी गुरुदेव को आध्यात्मिक गतिविधियों से अवगत कराया। कार्यक्रम की संयोजिका शांति दुधोड़िया ने अपनी भावनाएँ व्यक्त करते हुए संकल्पों की विस्तृत जानकारी दी।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने एवं साध्वीवर्या जी के साथ महिला मंडल के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक शासन गौरव साध्वी कल्पलता जी को भी आध्यात्मिक भेंट अर्पित कर बहनों ने आशीर्वाद प्राप्त किया।

आध्यात्मिक भेंट को बनाने में कन्या मंडल संयोजिका चेतना भुतोड़िया एवं मंत्री अलका बैद का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम में चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष माणकचंद नाहटा एवं सभा अध्यक्ष विजय सिंह सेठिया, तेयुप के अध्यक्ष सौरव भुतोड़िया एवं अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के परामर्शक विमला नाहटा, अमिता नाहटा एवं पूर्व परामर्शक चंपाबाई कोठारी एवं महिला मंडल के पदाधिकारीगण एवं कार्यकर्ता उपस्थित थे।

प्रतिक्रमण कार्यशाला का आयोजन

गंगाशहर।

अभातेममं के तत्त्वावधान में तेममं द्वारा प्रतिक्रमण कार्यशाला का आयोजन किया गया। मुनि शांति कुमार जी एवं मुनि जितेंद्र कुमार जी के सान्निध्य में आयोजित इस कार्यशाला में मुनिश्री ने प्रतिक्रमण की महत्ता बताते हुए इसके नियम उच्चारण एवं अर्थ के बारे में विवेचन किया।

मुनि जिनेंद्र कुमार जी ने कहा कि विभाव से स्वभाव में लौटना प्रतिक्रमण है। जैन धर्म में साधुओं के लिए प्रतिक्रमण करना अनिवार्य है तो श्रावक-श्राविकाओं के लिए भी इसकी उतनी ही उपयोगिता है। श्रावक-श्राविका समाज को नियमित नहीं तो कम से कम पाक्षिक प्रतिक्रमण जरूर करने का प्रयास करना चाहिए।

मुनि शांति कुमार जी ने एक कथा के माध्यम से प्रेरणा दी। मुनि अनुशासन कुमार जी एवं मुनि अनेकांत कमार जी ने भी अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी।

इस अवसर पर तेममं, गंगाशहर की अध्यक्षा ममता रांका ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में छह बहनों का उपासक श्रेणी में सम्मिलित होने पर सम्मान भी किया गया। महिला मंडल की पदाधिकारियों ने उपासिका संतोष बोथरा, रेणु बाफना, बुलबुल बुच्चा, शारदा छाजेड़, रक्षा बोथरा, कनक गोलछा का साहित्य से अभिनंदन किया।

चातुर्मासिक मंगल प्रवेश के आयोजन

शाहदरा, दिल्ली

शासनश्री साध्वी रतनश्री जी योजना विहार भंसाली भवन से विहार करके विशाल जुलूस के साथ ओसवाल भवन, विवेक विहार में चातुर्मासिक प्रवास के लिए पधारी। शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी ने इस वर्ष गांधीनगर और शाहदरा दोनों के बीच एक चातुर्मास प्रदान किया है। दोनों क्षेत्रों की जनता को कंधे-से कंधा मिलाकर शासन प्रभावना के कार्यों को उत्साह के साथ करना है। आप लोगों ने जो हमारा स्वागत किया वह स्वागत हमारा नहीं तेरापंथ धर्मसंघ का है। आचार्यश्री महाश्रमण जी का है। उनकी कृपा-आशीर्वाद से हमारा चातुर्मास प्रवास सफल रहे। ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है।

कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल के संगान के साथ हुआ। कार्यक्रम में दिल्ली विधानसभा के अध्यक्ष रामनिवास गोयल पधारे। आपने कहा कि आज चातुर्मास की परंपरा केवल जैन समाज में विद्यमान है, अन्य समाजों में यह परंपरा विछिन्न हो गई। मैं ने आचार्यश्री महाश्रमण जी की उच्च कोटिक की साधना का प्रभाव दिल्ली के ताल कटोरा स्टेडियम में कुछेक राजनेताओं की वीडियो के माध्यम से शुभकामनाएँ प्रेषण में देखा। मुझे यह सब देखकर अत्यंत प्रसन्नता की अनुभूति हुई। आज भी भारतीय संस्कृति में त्याग और संयम की पूजा हैं

शासनश्री साध्वी सुव्रता जी, शासनश्री साध्वी सुमनप्रभाजी, साध्वी चिन्तनप्रभाजी, साध्वी कार्तिकप्रभाजी ने वक्तव्य एवं गीत के द्वारा चातुर्मासिक करणीय कार्यों के लिए प्रेरणा प्रदान की।

कार्यक्रम में तेरापंथी महासभा के प्रभारी मन्नालाल बैद, शाहदरा सभाध्यक्ष पन्नालाल बैद, गांधीनगर सभाध्यक्ष कमल गांधी, ओसवाल समाज के अध्यक्ष बाबूलाल दुगड़ अणुव्रत समिति अध्यक्ष शांतिलाल पटावरी, तेयुप एवं महिला मंडल, ज्ञानशाला, कन्या मंडल आदि की उपस्थिति रही। शाहदरा सभा मंत्री आनंद बुच्चा ने कार्यक्रम का संचालन किया।

इचलकरंजी

साध्वी प्रमिला कुमारी जी का चातुर्मासिक मंगल प्रवेश तेरापंथ भवन में हुआ। सभी संस्था गणवेश के साथ जुलूस के साथ प्रवेश में शामिल थे।

कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री जी द्वारा नवकार मंत्र से हुई। तेममं द्वारा मंगलाचरण का संगान किया गया। बारिश के मौसम के बावजूद इचलकरंजी श्रावक-श्राविकाओं ने उत्साह दिखाकर प्रवेश में सहभागिता प्रदान की।

साध्वी आस्थाश्री जी और साध्वी विज्ञप्रभाजी ने अपनी प्रस्तुति द्वारा चातुर्मास में सभी कार्यक्रमों की जानकारी दी। साध्वी प्रमिला कुमारी जी ने पंच परमेष्ठी को वंदन करते हुए गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। चातुर्मास में विशेष धर्म आराधना का आह्वान किया।

सभा अध्यक्ष महेंद्र गीड़िया ने साध्वीश्रीजी का स्वागत व अभिनंदन किया और पधारे श्रावकों का स्वागत किया। कार्यक्रम में जयसिंहपुर अध्यक्ष ज्ञानचंद बरड़िया, तेयुप अध्यक्ष महेश पटवारी, महिला मंडल अध्यक्ष जयश्री देवी सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री पुष्पराज संकलेचा ने किया।

तप अभिनंदन एवं मुमुक्षु रोशनी का मंगलभावना समारोह

किशनगंज (बिहार)।

तपस्या शूरवीरों का काम है। आत्मबल, संकल्पबल के साथ-साथ तपस्या की जाती है। शरीर के साथ-साथ कषायों को भी तापना जरूरी है। आज इस उपभोग की संस्कृति में अपने आपको संयमित करना आत्मबल का परिचय है। निम्न बातें साध्वी संगीतश्री जी ने तेरापंथ भवन में आयोजित तप अभिनंदन एवं मंगलभावना समारोह कार्यक्रम में कहीं।

तेरापंथ भवन में साध्वी संगीतश्री जी अपनी तीनों साध्वियों के साथ चार माह के प्रवास पर हैं। इन चार माह में तेरापंथ धर्मसंध के अनुयायी आध्यात्मिक जीवन जीने की प्रेरणा ले रहे हैं। इसी क्रम में सुमित कोठारी, आस्था बैद, हीरा बैद और हर्षा बैद निराहार तपस्या कर रही हैं। इसके साथ-साथ कोलकाता से आई मुमुक्षु रोशनी का मंगलभावना समारोह आयोजित हुआ। मुमुक्षु रोशनी दीक्षार्थी है और आगामी दिनों में आचार्यश्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में गृहस्थ जीवन से साधु जीवन में प्रवेश करेगी, वह दीक्षा लेकर साध्वी बनेगी।

साध्वी संगीतश्री जी ने मंगल गीत से कार्यक्रम की शुरुआत की। उन्होंने दीक्षा के बारे में कहा कि दीक्षा आत्मा तक पहुँचने का मार्ग है। दीक्षा स्वयं के द्वारा स्वयं की खोज है। मुमुक्षु रोशनी गुरुचरणों में जा रही है, उन्होंने रोशनी से कहा कि तुम गुरु दृष्टि की आराधना करते रहना। तेरापंथ धर्मसंघ की दीक्षा–एक गुरु, एक विधान का महान उपक्रम है। अध्यात्म यात्रा का महान उपक्रम है।

इसी क्रम में साध्वी कमलविभा जी व साध्वी मुदिताश्री जी ने दीक्षार्थी रोशनी व निराहार रहकर तपस्या करने वाले उपस्थित चार तपस्वियों के प्रति मंगलभावना की व आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

कार्यक्रम में महासभ संरक्षक डॉ० राजकरण दफ्तरी, सभाध्यक्ष विमल दफ्तरी, महिला मंडल अध्यक्ष संतोष देवी दुगड़ सहित अनेक जन कार्यक्रम में उपस्थित थे। कार्यक्रम में खुशकीबाग, रायगंज, पूर्णिया, इस्लामपुर आदि क्षेत्रों के साथ-साथ स्थानीय लोगों की अच्छी उपस्थिति रही।

प्रतिक्रमण शिल्पशाला का आयोजन

हैदराबाद।

अभातेममं के निर्देशानुसार महिला मंडल के तत्त्वावधान में रूपांतरण थ्रू जैनिज्म के तहत शिल्पशाला प्रतिक्रमण का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। राजेंद्र बोथरा ने बताया कि कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से की गई। अध्यक्ष अनिता गीड़िया अभिनंदन करते हुए बताया कि प्रतिक्रमण का शाब्दिक अर्थ है उल्लंघन से लौटना। पीछे मुड़कर स्वयं को देखने का ईमानदार प्रयास है–प्रतिक्रमण। साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने कहा कि प्रतिक्रमण आत्मस्नान का नाम है। विभाव से स्वभाव में आने का उपक्रम है–प्रतिक्रमण, गलतियों का संशोधन करने का नाम है–प्रतिक्रमण।

साध्वीश्री जी ने धर्म परिषद को चातुर्मास में प्रतिक्रमण सीखने की प्रेरणा दी। पूरे भवन में श्रद्धालु समाज की लगभग २०० की उपस्थिति रही।

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

पाणिग्रहण संस्कार

सूरत।

तारानगर निवासी, सूरत प्रवासी राजश्री जैन के सुपुत्र हर्ष जैन का शुभ पाणिग्रहण संस्कार चरकी दादरी (हरियाणा) निवासी, सूरत प्रवासी अजय बंसल की सुपुत्री रिया बंसल के साथ जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजय कांत खटेड़, सुशील गुलगुलिया व मनीष कुमार मालू ने मंगल मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाया।

राजश्री, अजय व उनके पूरे परिवार ने संस्कारकों व उपस्थित सभी का आभार ज्ञापन किया। तेयुप अध्यक्ष अमित सेठिया व मंत्री अभिनंदन गादिया ने दोनों परिवारों का आभार व्यक्त करते हुए मंगलभावना पत्रक भेंट किया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

माउंट रोड, चेन्नई।

श्रीडूंगरगढ़ निवासी, चेन्नई प्रवासी सुरेंद्र मालू स्व० नरेंद्र मालू के नव प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से हुआ।

अभातेयुप संस्कारक स्वरूपचंद दांती एवं हनुमान सुखलेचा ने नमस्कार महामंत्र के सामुहिक समुच्चारण से कार्यक्रम शुभारंभ किया। अभातेयुप संस्कारक तेयुप उपाध्यक्ष संतोष सेठिया ने सभी के तिलक लगाया।

तेयुप मंत्री संदीप मूथा ने आभार व्यक्त किया। संस्कारकों द्वारा मंगलभावना पत्रक प्रदान किया गया। इस अवसर पर परिजनों के साथ गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

नूतन गृह प्रवेश

राजराजेश्वरी नगर।

भगवानदास बोहरा के दोनों सुपुत्रों महेश बोहरा एवं सुनील बोहरा का गृह प्रवेश का कार्यक्रम जैन संस्कार विधि से संस्कारक दिनेश मरोठी ने जैन मंत्रोच्चार के द्वारा संपन्न करवाया। सह-संस्कारक की भूमिका सौरव दुगड़ ने निभाई।

इस अवसर पर परिषद अध्यक्ष सुशील भंसाली ने शुभकामना प्रदान की एवं परिवारजन ने तेयुप का आभार जताया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

राजाजीनगर।

मोहनलाल गौतम संजीव गन्ना के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक सतीश पोरवाड, रनीत कोठरी एवं राजेश देरासरिया ने विभिन्न मंगल मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाया।

तेयुप द्वारा गन्ना परिवार को मंगलभावना यंत्र भेंट किया गया। मुकेश गन्ना एवं कमलेश गन्ना ने गन्ना परिवार की ओर से परिषद परिवार का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर गणमान्यजन उपस्थित थे।

नूतन गृह प्रवेश

पर्वत पाटिया।

उदयपुर निवासी, पर्वत पाटिया प्रवासी भूपेंद्र भेरूलाल कांग्रेचा के नूतन गृह प्रवेश का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से किया गया। संस्कारक रवि मालू एवं पवन बुच्चा ने संपूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

भूपेंद्र कांग्रेचा ने पधारे हुए संस्कारक एवं तेयुप के प्रति आभार ज्ञापित किया । परिषद की तरफ से मंगलभावना यंत्र भेंट किया गया।

नामकरण संस्कार

अहमदाबाद।

लीलादेवी रमेश कुमार चोपड़ा की सुपौत्री एवं योगिता नवनीत चोपड़ा की सुपुत्री का नामकरण जैन संस्कार विधि से करवाया गया। संस्कारक आनंद बोथरा, जागृत दुगड़, राजेश चोपड़ा एवं दिनेश बागरेचा ने मांगलिक मंत्रोच्चार द्वारा संपादित किया।

परिषद की ओर से स्मृति चिह्न के रूप में चोपड़ा परिवार को मंगलभावना पत्रक की भेंट दी गई। चिरंजीलाल चोपड़ा एवं रमेश चोपड़ा ने परिषद एवं संस्कारकों के प्रति आभार ज्ञापित किया। संचालन तेयुप कार्यकारिणी सदस्य जागृत दुगड़ ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
15 - 21 अगस्त, 2022

✦ *क्रोध दुर्बलता है। सामर्थ्य होते हुए भी नहीं मारना अहिंसा की साधना है। सक्षम होते हुए भी क्षमा करना बड़प्पन होता है।*
–आचार्यश्री महाश्रमण

पुरस्कार समारोह का आयोजन

अणुव्रत भवन, नई दिल्ली।

टीपीएफ नॉर्थ जोन ने अणुव्रत भवन, दिल्ली में अपनी क्षेत्रीय वार्षिक बैठक और पुरस्कार समारोह का आयोजन किया। टीपीएफ उत्तर क्षेत्र के अध्यक्ष श्रील लूंकण ने सभी अतिथियों का स्वागत किया और टीपीएफ की गतिविधियों के बारे में बताया तथा सचिव सीए स्वीटी जैन ने जोन और इसकी १३ शाखाओं द्वारा की गई गतिविधियों पर रिपोर्ट प्रस्तुत की।

इस अवसर पर एक नई शाखा, टीपीएफ, गाजियाबाद का भी शुभारंभ किया गया। बैठक का मुख्य आकर्षण विभिन्न शाखाओं के सदस्यों के बीच नेटवर्किंग, टीपीएफ राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और अन्य संगठनों के पदाधिकारियों के साथ बातचीत, शाखा टीमों द्वारा रोमांचक प्रदर्शन और पुरस्कार प्रदान करना, सम्मान देना था।

कार्यक्रम का आयोजन शासनश्री साध्वी संघमित्रा जी के सान्निध्य में हुआ। साध्वीश्री जी ने टीपीएफ उत्तर जोन द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना की। राज्यसभा सांसद लहर सिंह सिरोया, जिन्होंने समाज के कमजोर वर्ग के लिए सभी चिकित्सा सुविधा, शिक्षा सुविधा के रूप में टीपीएफ उत्तर क्षेत्र के योगदान की सराहना की। राजेश कुमार जैन एवं टीपीएफ उत्तर क्षेत्र के उपाध्यक्ष नंदलाल जैन ने टीम के सभी सदस्यों को चिकित्सा शिविर में सर्वश्रेष्ठ कार्य करने के लिए प्रेरित किया, जिससे गरीब लोगों को मुफ्त दवा, नेत्र शिविर आदि प्राप्त करने में मदद मिलती है। दिल्ली सभा के महामंत्री और टीपीएफ दिल्ली के सदस्य प्रमोद घोड़ावत ने कार्यक्रम का संयोजन किया।

टीपीएफ उत्तर क्षेत्र के अध्यक्ष श्रील लुंकण ने समाज के कमजोर वर्ग को शिक्षा उपलब्ध कराने की योजनाओं के बारे में बताया एवं सबको टीपीएफ द्वारा सिविल सर्विसेज की पढ़ाई में सहयोग के लिए दिल्ली में लिए गए भवन के बारे में अवगत कराया।

टीपीएफ की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सीए रितु जैन और महासचिव हिम्मत मांडोत ने टीम के साथ बातचीत की और उत्तर क्षेत्र नेतृत्व के मार्गदर्शन में शाखाओं द्वारा किए गए कार्यों की सराहना की।

टीपीएफ गौरव संपतमल नाहटा, जेएसटीएस सभा अध्यक्ष सुखराज सेठिया, महासभा उपाध्यक्ष संजय खटेड़, युवा विंग के अध्यक्ष विकास सुराणा, महिला विंग अध्यक्ष मंजु जैन, आईआरएस सचिव जैन और आईपीएस नेहा जैन सहित उत्तर भारत के शाखा नेता वार्षिक बैठक और पुरस्कार समारोह में उपस्थित थे।

भक्तामर - ऋद्धि सिद्धियों का भंडार

भीलवाड़ा।

तेरापंथ भवन में डॉ० साध्वी परमयशा जी के सान्निध्य में टीपीएफ के द्वारा भक्तामर कल्पवृक्ष अनुष्ठान ऋद्धि एवं मंत्र के द्वारा समायोजन हुआ।

डॉ० साध्वी परमयशाजी ने कहा कि जैन परंपरा में भक्तामर एक प्रभावशाली यंत्र मंत्र जाप का खजाना है। इस स्तोत्र से विघ्न-बाधाओं का निवारण होता है। जीवन में पुण्यों का जागरण होता है। अशुभ कर्म दूर होते हैं। शुभ कर्मों का अभ्युदय होता है। भक्तामर एक महाप्रभावक स्तोत्र है।

भगवान ऋषभ पहले राजा थे, पहले भिक्षु थे, पहले याचक थे, पहले केवली थे। महाप्रभु का १४ लाख पूर्व का आयुष्य था। जिसमें ८३ लाख पूर्व तक जिन्होंने राज्य का संचालन किया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। टीपीएफ गीत का संगान पूर्व अध्यक्ष निर्मल सुतरिया ने किया।

कार्यक्रम में राकेश सुतरिया, टीपीएफ अध्यक्ष ने स्वागत किया। तेरापंथ धर्मसंघ के सुप्रसिद्ध संगायक संजय भानावत एवं वनिता भानावत ने भक्तामर के श्लोकों को अपनी सुमधुर स्वर लहरियों के साथ संगान किया।

१३१ जोड़ों के द्वारा सामुहिक गीत की प्रस्तुति हुई। कार्यक्रम में साध्वीवृंद ने गीत का संगान किया।

कार्यक्रम का संचालन टीपीएफ के मंत्री अजय नौलखा ने किया। कार्यक्रम का आभार ज्ञापन टीपीएफ की सदस्य सोनल मारू ने किया।

तप अनुमोदन समारोह

सुनाम।

तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी के सहयोगी मुनि नमि कुमार जी ने ३४ दिन की तीव्र तपस्या करके अपने दृढ़ मनोबल, आत्मबल, संकल्पबल का परिचय दिया है। वह प्रशंसनीय ही नहीं अनुकरणीय है।

इस अवसर पर मुनि कमल कुमार जी स्वामी ने कहा कि यह सब नजारा जो आप देख रहे हैं, यह सब गुरुदेव की कृपा का फल है, उनके आशीर्वाद के बिना इस अवस्था में इस प्रकार प्रतिवर्ष लंबी तपस्या और प्रतिदिन के लंबे विहार असंभव हैं। मैं गुरुदेव के प्रति किन शब्दों में आभार प्रकट करूँ वैसे शब्दों का मेरे पास अभाव है। मैं तो आज यही निवेदन करता हूँ कि आपकी सतत ऐसी कृपा बरसती रहे, जिससे नमि मुनि अपने तीव्र मनोबल, आत्मबल के साथ तप के मार्ग पर सदा-सदा गतिमान बने रहें।

इस अवसर पर शासनश्री सहोदरी जी, साध्वी सोमलता जी के प्रति एवं भावी साध्वी विनम्रयशा जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ, जिनके उन्नत नवीन सरस गीत और ओजस्वी विचारों से मुनि नमि कुमार जी को अच्छा पोषण मिला है।

गुरुदेव के संदेश को सभा के अध्यक्ष रामस्वरूप जैन ने, साध्वी विनम्रयशा जी के विचारों को पंजाब प्रांतीय सभा के अध्यक्ष केवल कृष्ण गोयल ने पढ़कर सुनाए।

मुनि अमन कुमार जी ने पंजाबी भाषा में स्वरचित गीत का संगान कर सबको मंत्रमुग्ध कर दिया।

मुनि नमि कुमार जी ने अपने संक्षिप्त वक्तव्य में गुरुदेव के प्रति आभार प्रकट करते हुए मुनि कमल कुमार जी, मुनि अमन कुमा जी के सेवा सहयोग की प्रशंसा करते हुए अपने पारिवारिक लोगों के साथ सुनाम के भाई-बहनों के सहयोग की प्रशंसा की। काफी भाई-बहनों ने उपवास एकासन एवं २-२ सामायिक करके तपस्या की अनुमोदना की।

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट प्रतियोगिता का आयोजन

विजयवाड़ा।

अणुविभा के निर्देशानुसार अणुव्रत समिति ने पर्यावरण शुद्धि पर चित्रकला एवं निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। ज्ञानशाला, विजयवाड़ा के कुल १६ बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

एसीसी संयोजक निर्लेश डागा ने सभी बच्चों को सभी नियमों के बारे में जानकारी दी। समिति अध्यक्ष राजेंद्र कोठारी ने सभी बच्चों को प्रोत्साहन दिया।

इस अवसर पर ज्ञानशाला संयोजक राजेश श्यामसुखा, ज्ञानशाला मुख्य प्रशिक्षिका प्रभा डागा, प्रशिक्षिका प्रियंका बागरेचा, कविता दुगड़ सभी गणमान्य का विशेष सहयोग रहा। समिति अध्यक्ष ने सभी का आभार प्रकट किया।

शपथ ग्रहण समारोह के आयोजन

उधना

तेयुप, उधना की नवगठित टीम का शपथ ग्रहण समारोह साध्वी लब्धिश्री जी के सान्निध्य में संस्कार निर्माण शिविर के पाँचवा दिन एवं उधना सभा के साथ शपथ ग्रहण समारोह तेरापंथ भवन में आयोजित हुआ।

कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र द्वारा की गई। तेयुप, उधना के नव मनोनीत अध्यक्ष सुनील चंडालिया ने स्वागत वक्तव्य देते हुए अपनी नवगठित टीम की घोषणा की। तत्पश्चात तेयुप के निवर्तमान अध्यक्ष मनीष दक ने नव मनोनीत अध्यक्ष सुनील चंडालिया, मंत्री उत्कर्ष खाब्या, पदाधिकारी एवं नवगठित टीम के सभी कार्यकारिणी सदस्यों को शपथ दिलाई।

तेरापंथी महासभा के सहमंत्री अनिल चंडालिया, उधना सभा के नवमनोनीत अध्यक्ष बसंतीलाल नाहटा, तेयुप के निवर्तमान अध्यक्ष मनीष दक, महिला मंडल अध्यक्षा जस्सू बाफना ने तेयुप अध्यक्ष सुनील चंडालिया एवं उनकी टीम के सफलतम कार्यकाल के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित की।

साध्वी लब्धिश्री जी ने नव मनोनीत टीम को प्रेरणा देते हुए कहा कि युवकत्व हमेशा जागृत रहे। सभी संघ का अच्छा काम करें। कार्यक्रम के अंत में तेयुप के मंत्री उत्कर्ष खाब्या ने कार्यक्रम में पधारे सभी सभा-संस्था के पदाधिकारीगण महानुभावों का आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम में तेरापंथी महासभा, अभातेयुप सदस्य, सभा, तेमम, अणुव्रत समिति, किशोर मंडल, कन्या मंडल, ज्ञानशाला परिवार, टीपीएफ परिवार एवं उधना श्रावक समाज के सदस्यों की उपस्थिति रही।

कांकरोली

साध्वी मंजुयशाजी के सान्निध्य में तेयुप, कांकरोली द्वारा शपथ ग्रहण एवं दायित्व बोध कार्यशाला आयोजित हुई। तेयुप के पूर्व अध्यक्ष धनेंद्र मेहता एवं मनीष पगारिया दोनों ने जैन संस्कार विधि द्वारा तेयुप के नव निर्वाचित अध्यक्ष निखिल कच्छारा, मंत्री दिव्यांश कच्छारा आदि पूरी कार्यकारिणी टीम को शपथ ग्रहण करवाई।

कार्यक्रम का प्रारंभ प्रवीण पगारिया व ललित बाफना के विजय गीत के संगान से हुआ। तेयुप अध्यक्ष निखिल ने मुख्य अतिथियों का पूरी युवा टीम की ओर से स्वागत किया। श्रावक निष्ठा पत्र मेवाड़ कॉन्फ्रेंस के भूपेंद्र चोरड़िया ने किया। मुख्य वक्ता युवा गौरव पद्मचंद पटावरी ने अपने वक्तव्य में कहा कि आज कांकरोली में तेयुप की ओर से दायित्व बोध कार्यशाला का आयोजन किया गया। व्यक्ति परिवार में, समाज में, संस्था में एवं संघ में रहता है उसको अपने दायित्व का बोध होना चाहिए। वह केवल परिवार तक सीमित न रहे, सामाजिक, धार्मिक क्षेत्र में भी आगे आए। अपनी उदार भावना, सेवा भावना, कर्मठता से अपने प्रखर व्यक्तित्व की सही पहचान बनाए। साध्वीश्री जी ने गीत का सामुहिक संगान किया।

इस अवसर पर साध्वी चिन्मयप्रभाजी ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। साध्वी इंद्रप्रभाजी, साध्वी चारूप्रभाजी, साध्वी चिन्मयप्रभा जी ने एक सुमधुर गीत का संगान किया। तेयुप की ओर से आगंतुक अतिथियों का सम्मान किया गया। इस अवसर पर सभा अध्यक्ष प्रकाश सोनी, मंत्री विनोद, महिला मंडल अध्यक्षा इंदिरा पगारिया, मंत्री मनीषा, पूर्व अध्यक्ष मंजु दत्त आदि उपस्थित थे।

बोरियापुरा, गंगापुर

तेरापंथ सभा, बोरियापुरा का शपथ ग्रहण समारोह गंगापुर में साध्वी विशदप्रज्ञाजी के सान्निध्य में हुआ। साध्वीश्री जी ने नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यक्रम की शुरुआत करवाई। मंगलाचरण उपासक पुखराज बाफना ने किया। स्वागत वक्तव्य अध्यक्ष कैलाश बाफना ने किया। स्वागत गीत मीडिया प्रभारी राहुल बाफना ने प्रस्तुत किया। तत्पश्चात नवनिर्वाचित अध्यक्ष कैलाश बाफना ने अपनी कार्यकारिणी की घोषणा की। जिसकी शपथ संरक्षक एवं निवर्तमान अध्यक्ष नवरत्नमल बाफना एवं महासभा क्षेत्रीय प्रभारी निर्मल गोखरू एवं महासभा शाखा प्रभारी अजय ढिलीवाल ने दिलाई।

साध्वी विशदप्रज्ञा जी ने कहा कि जिस प्रकार नव कार्यकारिणी की शपथ विधि का कार्यक्रम सूरत अथवा बाहर ना करके गंगापुर में आयोजित किया गया उसकी प्रशंसा की व साधुवाद दिया। आपने कहा कि आगे बोरियापुर विकास करे, नए-नए कार्यक्रम कर अपनी जागरूकता का परिचय दे।

अध्यक्ष कैलाश बाफना ने अपने वक्तव्य में सभी के प्रति धन्यवाद व्यक्त किया। गंगापुर सभा अध्यक्ष घेवर बाबेल एवं सभा मंत्री नवनतनमल हिरण ने नव कार्यकारिणी को बधाई-शुभकामनाएँ प्रेषित की। कार्यक्रम में आसपास के क्षेत्र से आमली, बोरियापुरा, गंगापुर, बागौर, आशाहोली एवं अन्य क्षेत्रों से बड़ी संख्या में श्रावक समाज उपस्थित रहा। आभार ज्ञापन सभा परामर्शक पारसमल बाफना ने किया। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री राजेश बाफना ने किया।

आत्मा के आसपास

❑ आचार्य तुलसी ❑

प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा

आँख मूँदना ही ध्यान नहीं

ध्यान करना कोई कठिन बात नहीं है, कठिन बात है–अभ्यास की सही विधि को पकड़ना। मूल तत्त्व पकड़ में आ जाए तो लक्ष्य की दूरी स्वयं सिमट जाती है। प्रियता और अप्रियता की समाप्ति का क्षण ही सर्वाधिक मूल्यवान है, यदि वह किसी की पकड़ में आ जाए।

एक युवक कार से यात्रा कर रहा था। शहर से बहुत दूर जंगल में उसकी कार खराब हो गई। युवक ने बहुत प्रयत्न किया उसे ठीक करने का, पर वह ठीक नहीं हो सकी। संयोग की बात, एक मैकेनिक उधर से गुजरा। युवक ने उससे कार ठीक करने को कहा। वह बोला, 'कार ठीक कर दूँगा, पर रुपये एक हजार लूँगा।' युवक निरुपाय था। उसने अपनी स्वीकृति दे दीं मैकेनिक ने कार के इंजन को देखा, हथौड़ा हाथ में लिया, एक बार इंजन पर चोट की और कार स्टार्ट हो गई।

युवक विस्फारित आँखों से उसकी ओर देख रहा था। काम पूरा होने पर उसने एक हजार रुपये माँगे। युवक बोला–'यह क्या? एक चोट के एक हजार रुपये?' मैकेनिक ने मुसकराते हुए कहा–'बाबूजी! यह एक हजार रुपये चोट करने के नहीं हैं। चोट करने का मूल्य एक रुपया है। शेष ९९९ रुपये तो चोट कहाँ, किस समय और कैसे करनी है? इसके हैं।' युवक को समाधान मिल गया।

जो व्यक्ति प्रियता और अप्रियता में उलझा रहता है, वह उनसे मुक्त होने की स्थिति का अनुभव ही नहीं कर पाता। कोई देहाती व्यक्ति जब तक कई बार शहर में नहीं रह जाता, तब तक नागरिकता के नियमों को भी नहीं समझ पाता।

किसी देहाती व्यक्ति ने चौराहे के बीच में खड़े पुलिसमैन को देखा। वह बीच में चल रहे व्यक्तियों को एक किनारे चलने का निर्देश दे रहा था। देहाती उसकी बात सुनकर बोला–'कैसा मूर्ख है यह? स्वयं तो बीच में खड़ा है और दूसरों को कहता है किनारे चलो।' उस ग्रामीण को भला कैसे समझाया जाए?

पूज्य कालूगणी को मैंने ध्यान करते हुए बहुत कम देखा। मैं कई बार सोचता था कि उस समय ध्यान की कोई प्रक्रिया नहीं थी क्या? बाद में मैंने अनुभव किया कि उनके जीवन में प्रियता और अप्रियता के क्षण बहुत कम आते थे। उनकी चेतना इतनी निर्मल थी कि वे सहज रूप से ध्यानस्थ रहते थे। 'उत्तमा सहजा वृत्ति' सहज वृत्ति को बहुत उत्तम माना जाता है।

वर्धा के पास गोपुरी में एक बार हम आचार्य विनोबाजी से मिले। पास में कई भाई बैठे थे। किसी ने उनसे पूछ लिया–'बाबा! आप ध्यान नहीं करते हैं क्या?' यह सुनकर वे बोले–'यह पूछो कि मेरा ध्यान कब टूटता है?' यह घटना भी प्रियता और अप्रियता में नहीं उलझने की ओर संकेत करती है।

हमारे एक श्रावक हुए हैं–सुगनचंद आंचलिया। उनकी प्रतिकृति बहुत कम व्यक्तियों में दृष्टिगत होती है। प्रगाढ़ एकाग्रता थी उनके जीवन में। वे जिस समय जो काम करते, वही उनके सामने रहता। उन्हें कभी यात्रा पर जाना होता तो अपने साथियों से कहते–'मैं इतनी देर सो लेता हूँ।' साथी बोलते–'यह क्या तलाशा है? जाने का समय हो रहा है आप सोने की बात कर रहे हैं।' लोग देखते रह जाते और वे पंद्रह मिनट में गहरी नींद लेकर उठ जाते।

उन्होंने अपने जीवन में ब्रह्मचर्य के जो विलक्षण प्रयोग किए, उन्हें पढ़े, सुने और समझें तो आश्चर्य हुए बिना नहीं रहता। विलासिता के साधन उपलब्ध, विकास के हेतु उपस्थित, फिर भी मन विकृत न हो, यह धीरता का लक्षण है। ध्यान का लक्षण है। ऐसे व्यक्ति ही ध्यान का सही प्रयोग कर सकते हैं।

कुछ व्यक्ति कहते हैं कि हम प्रियता और अप्रियता में उलझना तो नहीं चाहते, किंतु हमारे सामने परिस्थिति ऐसी उपस्थित हो गई कि हमें ऐसा करना पड़ा। यह परिस्थितिवाद बहाना है। इसका सहारा लेकर कोई भी व्यक्ति परिस्थितियों का दास बन सकता है।

एक व्यक्ति कहता है–'मैं लड़ना कब चाहता था, पर परिस्थिति ऐसी थी कि मुझे झगड़ना पड़ा।' दूसरा व्यक्ति कहता है–'आपने मुझे उत्तेजित होते कभी देखा है? वह तो परिस्थिति ऐसी थी कि गुस्सा करना पड़ा।' तीसरा व्यक्ति कहता है–'मैंने अपने जीवन में कभी शराब का स्पर्श तक नहीं किया, पर परिस्थिति वश मुझे शराब पीनी पड़ी।' यही बात सिगरेट और जुए की है। मेरा यह निश्चित अभिमत है कि ऐसा सोचने और कहने वाले व्यक्ति धीर नहीं हो सकते, ध्यानी नहीं हो सकते, स्वभावरत नहीं हो सकते। परिस्थितिवाद साधना के क्षेत्र में सबसे बड़ी बाधा है। इससे मुक्त होने वाला साधक ही आगे बढ़ सकता है।

साधना की परिपक्वता में उसके लिए अतिरिक्त समय लगाएँ या नहीं, आँख मूँदकर बैठे या नहीं, कोई अंतर नहीं आएगा। किंतु साधना के प्रारंभिक काल में अनवरत अभ्यास करना है। एकांत में रहना है, मौन करना है, कायोत्सर्ग करना है, ध्यान करना है और वह सब कुछ करना है जो समत्व की अनुभूति के लिए आवश्यक है। शिखर तक पहुँचने के बाद, जीवन में रूपंतरण घटित होने के बाद, प्रियता और अप्रियता के भाव समाप्त होने के बाद साधक कृतार्थ हो जाता है। फिर उसकी हर क्रिया ध्यान बन जाती है।

देश और काल : एक बहाना

साधना की सफलता में देश, काल और परिस्थिति का भी कोई योग है या नहीं? यह एक प्रश्न है। इस प्रश्न पर सापेक्ष दृष्टि से विचार करना होगा। देश, काल और परिस्थिति को न तो सर्वथा नकारा जा सकता है और न इन्हें अतिरिक्त मूल्य देने की अपेक्षा है। क्योंकि जो देश और काल की प्रतीक्षा करते हैं, वे कुछ भी नहीं कर सकते। देश और कालगत बाधाओं को निरस्त कर जो आगे बढ़ जाते हैं, वे ही कुछ करके दिखा सकते हैं।

आचार्य भिक्षु का नाम तो आपने सुना ही है। मुनि जीवन स्वीकार के करने बाद उन्हें एक बार फिर अभिनिष्क्रमण किया। अभिनिष्क्रमण के लिए तैयार होने से पहले उन्होंने अपने गुरु के पास विनम्र अनुरोध करते हुए कहा, 'गुरुदेव! हमने घर, परिवार और सारी सुख-सुविधाएँ साधना के लिए छोड़ी हैं। इस समय साधना का जो क्रम चल रहा है, वह समाधायक नहीं है। हमारा मन यहाँ उलझ रहा है, कृपा कर आप हमें समाधान दें।

अपने प्रिय शिष्य भीखण के इस आवेदन पर टिप्पणी करते हुए गुरु ने कहा–'भीखण! तुम नहीं जानते यह देश और काल कैसा है? यह कलिकाल है। इसमें जो कुछ हो रहा है, वही पर्याप्त है। इससे आगे बढ़ने की स्थिति नहीं है।'

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

❑ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ❑

(८०)

सृष्टि का इतिहास यह रहता अधूरा अगर इसमें
जीवनी के पृष्ठ अनुपम ये तुम्हारे जुड़ न पाते
शिशिर में मधुमास का कब रंग यह खिलता सुहाना
जो गले में माधुरी भरकर समय पर तुम न गाते।।

बढ़ रही थी आदमी से आदमी के बीच दूरी
भेद की दीवार लंबी और ऊँची हो गई थी
टूटता ही जा रहा था मन मनुज का सब तरह से
चेतना पुरुषार्थ की जाकर कहीं पर सो गई थी
जहर की पुड़िया मिलाकर पी रहा था मधुर पय में
मरण था निश्चित अगर पीयूष लेकर तुम न आते।।

तैरती थी पीर नयनों में अकारण आदमी के
हुआ बोझिल मन व्यथा के भार से पग डगमगाते
बत्तियाँ जलती रहीं बढ़ता रहा पथ में तिमिर भी
भ्रांत हो जाते सभी यदि तुम नहीं सत्पथ दिखाते
ठहर जाते चरण सब पगडंडियों के मोड़ पर ही
सब दिशाओं में न यदि तुम दीप बनकर जगमगाते।।

सूखता ही जा रहा रस मधुर रिश्तों का निरंतर
जिंदगी खुद मौत से संबंध जोड़े जा रही थी
हो गया कम परस्पर संवाद अपनों से यहाँ पर
स्नेह-सरिता का मनोहर बाँध तोड़े जा रही थी
उजड़ जाता मानवों का लोक सारा उस समय ही
जो नहीं संदेश जीवन का समय पर तुम सुनाते।।

(८१)

युद्ध के उन्माद से थी त्रस्त दुनिया
शांति का पैगाम मंगलमय सुनाया
हुआ जब आजाद भारत आर्यवर ने
सही आजादी दिलाने गीत गाया।।

चेतना व्रत की जगे हर आदमी में
संहिता आचार की सुंदर बताई
'संयमः खलु जीवनम्' उद्घोष देकर
सादगी की राह श्रेयस्कर दिखाई
नशा कारण नाश का है जिंदगी में
बोधदायी पाठ जन-जन को पढ़ाया।।

सत्य ही है सार इस संसार में बस
प्रेरणा दी सत्य में निष्ठा जगाने
चलाया अभियान झेल विरोध भारी
प्रतिष्ठा ईमानदारी की बढ़ाने
नहीं विचलित हो कभी सन्मार्ग से मन
अडिग रहना सत्य पर तुमने सिखाया।।

रूढ़ियों की सघन कारा तोड़ा तुमने
बंद अनगिन जागरण के द्वार खोले
मंत्र श्रेयस्कर दिए जीवन-काल के
जिंदगी में इंद्रधनुषी रंग घोले
स्वस्थता परिवार और समाज में हो
पंथ वह सीधा-सरल तुमने दिखाया।।

(क्रमशः)

✦ विद्या संस्थानों में लौकिक विद्या पढ़ाई जाती है। इसके साथ अलौकिक, अर्थात् आत्मविद्या पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए।
—आचार्यश्री महाश्रमण

तेरापंथ समाज के मानव सेवा आयाम की राष्ट्रव्यापी गूंज

सहयोग एवं समर्थन में जुड़ी दिग्गज हस्तियां

श्री राजनाथ सिंह
रक्षा मंत्री -भारत

श्री नितिन गडकरी
सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री -भारत

श्रीमती स्मृति ईरानी
महिला और बाल विकास मंत्री -भारत सरकार

डॉ. श्री एस. जयशंकर
विदेश मंत्री -भारत

श्री ओम बिरला
लोकसभा अध्यक्ष

श्री नित्यानंद राय
केंद्रीय गृह राज्य मंत्री

श्री वैंकेया नायडू पूर्व उपराष्ट्रपति -भारत

श्री किशोर शर्मा
आईटी सेल प्रबं. -हिमा. प्रदेश

श्री गजेंद्र सिंह शेखावत
केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री, भारत

श्री महेंद्रजीत सिंह मालवीय
विधायक -राजस्थान

श्री अश्विन कुमार चौबे
केंद्रीय राज्य मंत्री

श्री अश्विनी वैष्णव जी रेल
संचार और इलेक्ट्रॉनिक्स मंत्री

डॉ. विमल कुमार जैन
भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र

श्री कैलाश चौधरी
केंद्रीय कृषि और किसान कल्याण राज्य मंत्री -भारत

आरजे प्रवीन
Red FM 93.5

श्री नरेंद्र सिंह तोमर
कृषि मंत्री,भारत सरकार

श्री नितिन नवीन
पथ निर्माण मंत्री -बिहार सरकार

शुभाकानाओं सहित
Jaishree Cotton Mills
कोठारी अशोककुमार, कैलाशचंद्र, नितिनकुमार, अंकुरकुमार तातेड़
जसोल मदुरै सूरत पाली ईरोड
मानव हैं मानवता में प्राण भरें, आओ संकल्पित हो रक्तदान करें

Advertorial
Lalwani Ferro Alloys Ltd
कमल किशोर संदीप कुमार ललवानी
नोखा - कोलकाता

तेरांपथ समाज के मानव सेवा में दिग्गज हस्तियों का मिला व्यापक समर्थन

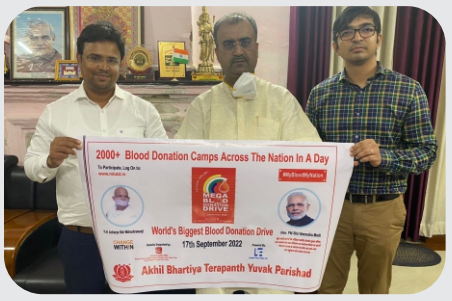

श्री मंगल पाण्डेय
स्वास्थ्य मंत्री, बिहार

श्रीमती मीनाक्षी लेखी
विदेश और संस्कृति राज्य मंत्री

सुश्री उषा ठाकुर
पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री -मध्यप्रदेश

श्री जितेंद्र तोमर पूर्व विधायक
एवं पूर्व कानून व पर्यटन मंत्री -दिल्ली सरकार

श्री आदर्श शर्मा
फाइनेंस फेडरेशन ऑफ इंडिया

श्री राहुल कोठारी
भाजपा प्रदेश मंत्री

श्री शाहनवाज हुसैन
उद्योग मंत्री -बिहार, राष्ट्रीय प्रवक्ता बीजेपी

श्री धर्मपाल सिंह
भाजपा संगठन मंत्री -झारखंड

श्री पवन राणा
संगठन मंत्री, भाजपा -हिमाचल

श्री प्रताप चन्द्र सारंगी
पूर्व केबिनेट मंत्री

श्री प्रभु राम चौधरी
लोक परिवार कल्याण एवं, स्वास्थ्य मंत्री -मध्य प्रदेश

श्री आनंद जैन (आईपीएस)
निदेशक भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो, जम्मू & कश्मीर

श्री भीकू दलसानिया
संगठन मंत्री बीजेपी -बिहार

श्री शिव राज सिंह चौहान
माननीय मुख्य मंत्री -मध्यप्रदेश सरकार

श्री सर्वानंद सोनवाल
बंदरगाह जहाजरानी एवं जलमार्ग एवं आयुष मंत्री

श्री मनोज सिंहा
उपराज्यपाल- जम्मू कश्मीर

श्री सुरेंद्र सिंह जाड़ावत
राज्य मंत्री - राजस्थान सरकार

श्री हर्ष संघवी
गृह मंत्री -गुजरात राज्य

अंकिता पाटिल
डेप्युटी डायरेक्टर ब्लड सेफ्टी

श्री अजीत कुमार टाटा
बीएसएफ, डीआईजी, पीएसओ

17 सितम्बर 2022 को अभातेयुप रक्तदान का एक नया इतिहास रचने जा रही है, जिसमें 1000 से अधिक रक्तदान शिविरों का आयोजन किया जाएगा। अपेक्षित है कि सभी लोग उस दिन अपनी औद्योगिक इकाईयों, व्यवसायिक प्रतिष्ठानों, अपने संपर्क के व्यापारिक संगठनों के माध्यम से रक्तदान शिविरों का आयोजन करवा कर मानवता के इस यज्ञ में अपनी आहुती प्रदान करें। कृपया रक्तदान शिविर रजिस्ट्रेशन के लिए या अन्य किसी जानकारी के लिए www.mbdd.in पर लॉगिन करें।

✦ *जीवन में समता भाव प्रस्फुटित हो जाता है तो मानना चाहिए कि व्यक्ति के जीवन में धर्म अवतरित हो गया।*
–आचार्यश्री महाश्रमण

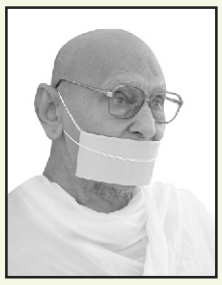

संबोधि

❑ **आचार्य महाप्रज्ञ** ❑

बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(१०) आत्मीयेषु च भावेषु, नात्मानं यो हि पश्यति।
तीव्रमोहविमूढात्मा, मिथ्यादृष्टिः स उच्यते।।

जो आत्मीय भावों में आत्मा को नहीं देखता और तीव्र मोह–अनंतानुबंधी कषाय के उदय से जिसकी आत्मा विमूढ है, वह मिथ्यादृष्टि कहलाता है।

मोह-कर्म की सोलह मुख्य कर्म-प्रकृतियाँ हैं–
अनंतानुबंधी–क्रोध, मान, माया, लोभ।
अप्रत्याख्यानी–क्रोध, मान, माया, लोभ।
प्रत्याख्यानी–क्रोध, मान, माया, लोभ।
संज्वलन–क्रोध, मान, माया, लोभ।

मिथ्यादृष्टि में अनंतानुबंधी मोह का तीव्र उदय रहता है। मोह की अल्प मात्रा भी आत्म-विकास में बाधक है। जहाँ तीव्र मोह होता है, वहाँ आत्म-विकास, का स्वप्न देखना भी असंभव है।

मोह आत्मा को विमूढ़ किए रखता है। विमूढ़ व्यक्ति न सम्यक् देखता है, न सम्यक् जानता है और न सम्यक् आचरण करता है। वह विभाग को अपना मानता है और वहीं चिपका रहता है। स्वभाव की ओर उसकी दृष्टि स्फुरित नहीं होती।

आचार्य यशोविजयजी कहते हैं कि मोह के इस मंत्र ने समग्र जगत् को अंधा बना रखा है। पर-भावों में यह मेरा है, मैं इसका हूँ, इसी को उलटकर यों कह दिया जाए कि–यह मेरा नहीं है और में इसका नहीं हूँ–तो वह व्यक्ति मोहजित् हो जाता है।

(११) यथार्थनिर्णयः सम्यग्-ज्ञानं प्रमाणमिष्यते।
दृष्टि प्रामाणिकी चैषा, दृष्टिरागमिकी परा।।

वस्तु का यथार्थ निर्णय करने वाला सम्यग् ज्ञान 'प्रमाण' कहलाता है। यह प्रमाण-मीमांसा की दृष्टि है और आगमिक दृष्टि इससे भिन्न है।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ **मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं'** ❑

धर्म बोध

दान धर्म

प्रश्न २० : संयमी को देने में धर्म-पुण्य होता है, असंयमी को देने में नहीं, यह कैसे?

उत्तर : असंयमी को खिलाने-पिलाने आदि से उनके असंयम का पोषण होता है। असंयमी के शरीर को परिग्रह माना गया है। अठारह पापों में परिग्रह को पाँचवाँ पाप माना है। फिर परिग्रह की वृद्धि या संरक्षण में धर्म कैसे हो सकता है? संयमी के शरीर को परिग्रह नहीं माना है, अपितु संयम-पालन का साधन माना है। उनको देने से उनके संयमी शरीर के पोषण में वह सहायक बनता है, इसलिए वह धर्म है।

प्रश्न २१ : क्या साधुओं के भोजन करने में धर्म है?

उत्तर : साधुओं के भोजन करने में धर्म है, क्योंकि उनका भोजन करने का उद्देश्य मात्र संयम-यात्रा को निर्बाध रूप से चलाना है। आगमों में यह वर्णित है कि मुनि शुद्ध एषणीय आहार करता हुआ सातों कर्म प्रकृतियाँ जो दीर्घावधि की हैं, उन्हें स्वल्पावधि की कर देता है। कर्मों के तीव्र रस को मंद रस वाला बना देता है।

प्रश्न २२ : अशुद्ध दान लेने वाले मुनि क्या दोष के भागीदार होते हैं?

उत्तर : जो मुनि जानता हुआ भी दोषयुक्त भोजन आदि ग्रहण करता है, तो उसके पाप का बंध होता है। ऐसा करता हुआ वह अपने मुनि-धर्म से च्युत हो जाता है। साधनाशील मुनि अपनी प्रज्ञा से भोजन आदि को बयालीस दोषों से रहित जानता हुआ ग्रहण करता है, किंतु केवलज्ञानियों की दृष्टि में वह अशुद्ध है, तदपि उन्हें पाप नहीं लगता। उस भोजन को करता हुआ मुनि आराधक पद को पाता है।

प्रश्न २३ : विसर्जन किसे कहते हैं?

उत्तर : ममत्व के परित्याग को विसर्जन करते हैं।

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

❑ **आचार्य महाश्रमण** ❑

आचार्य अभयदेव (नवांगी टीकाकार)

आचार्य अभयदेव बोले–'श्रावको! चिंता मत करो। धर्म के प्रताप से सब ठीक होगा।' आचार्य अभयदेव के इन शब्दों से सबको संतोष मिला। दूसरे दिन सुरक्षित माल मिल जाने की सूचना पाकर सबको अत्यधिक प्रसन्नता हुई। आचार्य अभयदेव के पास जाकर समवेत स्वर में श्रावकों ने निवेदन किया–'इस माल की बिक्री से हमें जो लाभ होगा, उसका अर्द्धांश टीका-साहित्य के लेखन-कार्य में व्यय करेंगे।'

इन श्रावकों द्वारा प्रदत्त धनराशि से टीका-साहित्य की अनेक प्रतिलिपियाँ निर्मित हुईं। तत्कालीन प्रमुख आचार्यों के पास कई स्थानों पर उनका ओका साहित्य पहुँचाया गया।

आचार्य अभयदेव की सर्वत्र प्रसिद्ध हुई। लोग कहने लगे–'सिद्धांत पारगामी, आगम साहित्य के निष्णात विद्वान् आचार्य अभयदेव हैं।'

कार्यकाल की कठिनाइयाँ

आगमों पर टीका लिखते समय आचार्य अभयदेवसूरि के सामने अनेक कठिनाइयाँ थीं। स्थानांग वृत्ति की प्रशस्ति में उन्होंने कार्यकाल की कठिनाइयों का उल्लेख निम्न शब्दों में किया है–

सत्सम्प्रदायहीनत्वात् सदूहस्य वियोगतः।
सर्वस्वपरशास्त्राणा मदृष्टेरस्मृतेश्च मे।।
वाचनानामनेकत्वात् पुस्तकानामशुद्धितः।
सूत्राणामतिगाम्भीर्याद् मतभेदाच्च कुत्रचित्।।

इस पद्य के वर्णनानुसार इस समय अभयदेवसूरि के सामने सत्संप्रदाय का अभाव था अर्थात् अर्थ-बोध की सम्यक् गुरु-परंपरा उन्हें प्राप्त नहीं थी। अर्थ की यथार्थ आलोचनात्मक स्थितियाँ और तर्कपूर्ण व्याख्या भी नहीं थी। आगमों की अध्यापन-पद्धतियाँ भिन्न-भिन्न थीं। आगमों की प्रतिलिपियों में अनेक गलतियाँ थीं। शुद्ध प्रति खोजने पर भी उपलब्ध नहीं हो पाती थी। आगम सूत्रात्मक होने के कारण गंभीर थे। अर्थविषयक नाना प्रकार की धारणाएँ थीं।

सिद्धांतों के समुचित अर्थ प्राप्ति हेतु इन कठिनाइयों के होते हुए भी अभयदेवसूरि के गतिमान चरण आगे से आगे बढ़ते रहे। मार्ग बनता गया।

द्रोणाचार्य का सहयोग

आचार्य अभयदेव को टीका-रचना के कार्य में द्रोणाचार्य का महान् सहयोग प्राप्त हुआ था। द्रोणाचार्य चैत्यवासी आचार्य थे। वे बहुश्रुत थे, आगमधर थे एवं स्व-पर-दर्शन के विशिष्ट ज्ञाता थे। द्रोणाचार्य की ओघ निर्युक्ति टीका के अतिरिक्त उनकी अपनी कोई टीका उपलब्ध नहीं है।

अभयदेवसूरि सुविहितमार्गी थे। द्रोणाचार्य का संबंध चैत्यवासी परंपरा से होते हुए भी अभयदेव सूरि के प्रति उनका विशेष सद्भाव था। अभयदेवसूरि भी द्रोणाचार्य के आगम ज्ञान से विशेष प्रभावित थे। द्रोणाचार्य जब अपने शिष्यों को आगम वाचना प्रदान करते उस समय स्वयं अभयदेवसूरि उनसे आगम वाचना लेने जाते। गण-भिन्नता ज्ञान-ग्रहण में बाधक नहीं बनी थी।

अभयदेवसूरि को द्रोणाचार्य खड़े होकर सम्मान देते और उनको अपने पास आसन प्रदान करते। द्रोणाचार्य का अभयदेवसूरि के प्रति आदरभाव द्रोणाचार्य के शिष्यों में ईर्ष्या का विषय बन गया था। शिष्य कुपित होकर कभी-कभी परस्पर में चर्चा करते–

इस अभयदेव में हमारे से अधिक कौन सी विशेषता है जिसके कारण हमारे प्रमुख नायक द्रोणाचार्य खड़े होकर इस प्रकार समादर प्रदान करते हैं।

शिष्यों के मन में उठने वाले प्रश्नों को द्रोणाचार्य मनोवैज्ञानिक ढंग से समाहित करते और उनके सामने आचार्य अभयदेव के गुणों का एवं विशेषताओं का खुले हृदय से व्याख्यान करते।

टीकाकार आचार्य अभयदेवसूरि सोलह वर्ष की उम्र में आचार्य बने। उन्होंने इक्यावन वर्ष तक धर्मसंघ के कुशल संचालन का अपना दायित्व निभाया और जैनशासन की महनीय सेवाएँ कीं।

प्रभावक चरित्र के अनुसार अभयदेव का स्वर्गवास पाटण में हुआ था। पाटण में उस समय नरेश कर्णराज का राज्य था। **(क्रमशः)**

मासखमण तप अभिनंदन के कार्यक्रम

शाहदरा, दिल्ली

शासनश्री साध्वी रतनश्री जी के सान्निध्य में मधु बोथरा (गंगाशहर निवासी, लक्ष्मीनगर दिल्ली प्रवासी) धर्मपत्नी नवरत्न बोथरा ने २६ की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। आगे बढ़ने का मंगलकारी भाव है।

शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने कहा कि तपस्या शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक विशुद्धि का सर्वोत्तम उपाय है। आयुर्वेदिक प्राकृतिक चिकित्सा तो लंघ न करना सर्वोत्तम औषधि है, मैं ऐसा मानती हूँ–जैन दर्शन में तपस्या कर्म निर्जरा का सर्वोत्कृष्ट उपाय है। मधु ने मासखमण तपस्या कर अपने संकल्प को सिद्धि तक पहुँचाया है।

शासनश्री साध्वी सुव्रताजी ने कहा कि मधु को अपने पिता स्व० हंसराज भंसाली से प्रेरणा मिली है कि उन्होंने अपने जीवन में १३ मासखमण किए थे तो मैं क्यों नहीं कर सकती। इसी भावना को इसने साकार किया। मैं इनकी तपस्या की अनुमोदना करते हुए आगे बढ़ने का आशीर्वाद प्रदान करती हूँ।

साध्वी कार्तिकप्रभाजी, साध्वी चिंतनप्रभाजी ने गीतिका के माध्यम से बहन के तप की अनुमोदना की। तप अनुमोदना के क्रम में गीतिका व वक्तव्य के माध्यम से दिल्ली सभा उपाध्यक्ष सुभाष सेठिया, शाहदरा सभा मंत्री आनंद बुच्चा, तेयुप दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष विकास बोथरा, तेमम के क्षेत्रीय संयोजक मंजु बांठिया सहित अनेक जनों ने अपने भाव रखे।

तपस्वी हनुमान सेठिया, शाहदरा सभा अध्यक्ष पन्नालाल बैद आदि ने शाहदरा सभा की ओर से तपस्वी बहन का साहित्य से सम्मान किया। कार्यक्रम का संचालन महेंद्र चोरड़िया ने किया।

किशनगंज

साध्वी संगीतश्री जी के सान्निध्य में स्थानीय तेरापंथ भवन में सुमन सुराणा के मासखमण की तपस्या का तपोभिनंदन समारोह मनाया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ महिला मंडल के मंगल गीत से हुआ।

तप के द्वारा अपने परिवार का और तेरापंथ धर्मसंघ का नाम स्वर्ण अक्षरों से अंकित करने वाली बहन सुमन के परिवार वालों ने गीतिका, पुत्री ने कविता एवं तारा देवी पुगलिया ने गीतिका के माध्यम से तपस्वी बहन का अभिनंदन किया।

साध्वी संगीतश्री जी ने कहा कि भारतीय दर्शन तीन धाराओं में विकसित है–वैदिक दर्शन में हठयोग, बौद्ध दर्शन में अष्टांग और जैन दर्शन में तपोयोग का महत्त्व है। तपस्या आत्मशुद्धि का महान साधन है। तपस्या के लिए संकल्प बल मजबूत होना चाहिए। तपस्विनी सुमन का संकल्प बेजोड़ है।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी का संदेश इनके लिए छत्र बना है। हम तप की मंगलकामना शुभकामना करते हैं कि आप तप में उत्तरोत्तर आगे बढ़ती रहें, कुल और संघ का नाम रोशन करती रहें।

इसी क्रम साध्वीवृंद ने तपस्वी बहन सुमन के तप की अनुमोदना की।

स्थानीय सभा के अध्यक्ष विमल दफ्तरी, सभा के संरक्षक राजकरण दफ्तरी, महिला मंडल की अध्यक्षा संतोष दुगड़, तेयुप के मंत्री दिलीप सेठिया, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष संजय बैद, नेपाल-बिहार झारखंड के उपाध्यक्ष चैनरूप दुगड़, दिगंबर जैन समाज के विशिष्ट श्रावक त्रिलोकचंद जैन, मारवाड़ी युवा मंच के दिनेश पारीक, कमल कोठारी सभी ने तपस्वी बहन के अभिनंदन में अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने तपस्वी बहन को आशीर्वाद स्वरूप संदेश का वाचन सभा के मंत्री अजय बैद ने किया।

इसके बाद स्थानीय सभा, महिला मंडल, अणुव्रत समिति, ज्ञानशाला ने तपस्वी बहन को अभिनंदन पत्र देकर सम्मानित किया एवं तप की अनुमोदना की।

तप के इसी क्रम में अब तक दो मासखमण, तीन पखवाड़े, दो नौ, तीन अठाई, दो सौ तेले अब तक शिखर चढ़ चुके हैं। पचरंगी एवं अन्य तपस्या प्रवर्धमान है। इस अभिनंदन समारोह का संचालन कमल छोरिया ने किया।

साहुकारपेट, चेन्नई

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा भवन में तपस्विनी बहन विमला देवी मांडोत, धर्मपत्नी रतनलाल मांडोत ने अत्यंत उल्लास के साथ मासखमण तप का प्रत्याख्यान किया। बहन का यह चौदहवाँ मासखमण है।

मासखमण तप-अनुमोदना सभा को संबोधित करते हुए साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि भगवान महावीर ने ज्ञान, दर्शन, चारित्र एवं तप के समन्वय को मोक्षमार्ग कहा है। चातुर्मासकाल में साधु-साध्वियों का प्रवास एक स्थान में होने से मोक्षमार्ग के इन चारों घटकों की विशेष साधना एवं प्रेरणा दी जा सकती है। श्राविका विमलादेवी ने अपने जीवन को तपमय बना लिया है। दृढ़ संकल्पी ही ऐसा काम कर सकता है। मैं विमला को साधुवाद देना चाहूँगी, जिन्होंने हमारी प्रेरणा को बहुमान देकर मासखमण कर लिया। आप निरंतर तप के मार्ग पर आगे बढ़ते रहें, यह मंगलकामना है।

तेरापंथ सभाध्यक्ष उगमराज सांड ने तपस्विनी बहन को शुभकामना दी। उपाध्यक्ष विजय सेठिया ने साध्वीप्रमुखाश्री जी के संदेश का वाचन किया। सहमंत्री देवीलाल हिरण ने प्रशस्तिपत्र का वाचन किया। मांडोत परिवार की बहनों ने गीत एवं पोकरना परिवार के बच्चों ने नाटिका प्रस्तुत की। पौत्र रिषित एवं पौत्री प्रांजल ने अपनी दादी माँ के तप की अनुमोदना की।

तेयुप अध्यक्ष विकास कोठारी, महिला मंडल अध्यक्ष पुष्पा हिरण, सह महिला मंडल की बहनों ने नव्य शैली में मासखमण साधिका का परिचय प्रस्तुत किया। साध्वीवृंद ने तप-अनुमोदना गीतिका प्रस्तुत की। बहन की ननद श्राविका नवरत्न देवी देरासरिया के भाभी की तपस्या के उपलक्ष्य में बत्तीस की तपस्या करने का मानसिक संकल्प प्रस्तुत किया। रतनलाल मांडोत ने कहा कि साध्वीश्री जी की प्रेरणा से ही आज का मेरी पत्नी का मासखमण हो सका है। कार्यक्रम का संचालन साध्वी राजुलप्रभा जी ने किया।

कांटाबांजी

मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में मासखमण तप करने वाली गायत्री शुभंकर जैन का तपाभिनंदन समारोह आयोजित हुआ। मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि धर्म मंगलकारी है, अमंगल को दूर करने वाला है। धर्म मूल तत्त्व है, जड़ है। धर्म की जड़ हरी रहनी चाहिए। जड़ हरी रहती है तो फल-फूल मिलते रहेंगे। प्रभु नाम की माला फेरने से माल मिलता है, तभी व्यक्ति मालामाल बनता है। सुबह उठते ही भगवान का जप अवश्य करना चाहिए। इस संयम की साधना से जहाँ अनेकानेक राष्ट्रीय समस्याएँ समाहित होती हैं वहीं व्यक्ति को मानसिक तोष एवं शांति का अनुभव होता है। भगवान महावीर द्वारा निर्देशित संयम और सीमाकरण का संदेश सभी को अमल में लाने की आवश्यकता है।

गायत्री जैन ने बहुत बड़ी भेंट मासखमण की अर्पित की है। पूरे परिवार में धर्म के संस्कार हैं। परिवार के सहयोग से ही व्यक्ति धर्म के पथ पर अग्रसर होता है। शुभंकर स्वयं तपस्वी है। परिवार धर्म के पथ पर आगे बढ़ता रहे, यही मंगलकामना।

मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि भावयुक्त होकर की गई क्रिया भावक्रिया होती है। भावना का बहुत बड़ा महत्त्व होता है। गायत्री जैन ने जागरूकता के साथ मासखमण तप किया है। चार महीने पूर्व संतों को दिए गए वचन से आज उऋण हुए हैं। गुरुदेव की उपासना में महीनों रहने वाला परिवार है तो धर्मनिष्ठा का भाव प्रबल बन जाता है। धर्मनिष्ठा के संस्कार का असर खुशी जैन में झलक रहा है। साधु-साध्वी का योग मिलता रहे तो खुशी भविष्य में दीपती हुई साध्वी बन सकती है। शुभंकर भी निरंतर तप में आगे बढ़ता रहे, धर्मसंघ की सेवा करता रहे। मीडिया प्रभारी अविनाश जैन ने बताया कि तेरांपथ सभा अध्यक्ष युवराज जैन, तेयुप अध्यक्ष अंकित जैन, कांटाबांजी तेमम, प्रांतीय सभा अध्यक्ष मुकेश जैन, केसिंगा से शुभंकर जैन, खुशी जैन, केसिंगा सभा अध्यक्ष रामनिवास जैन, केसिंगा महिला मंडल अध्यक्ष अंकिता जैन ने गीत एवं वक्तव्य के द्वारा तप अनुमोदना की।

कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री सुमित जैन ने किया। मासखमण तप अनुमोदन में कांटाबांजी से अंकित जैन, सुमित जैन, जयमाला एवं शुभंकर जैन ने इस चातुर्मास में अठाई तप का संकल्प लिया। अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने त्याग की भेंट मुनिवृंद को अर्पित की। तेरापंथ सभा कांटाबांजी, तेयुप, तेमम, प्रांतीय सभा, तेरापंथ सभा केसिंगा एवं तेमम ने तपस्विनी गायत्री को सम्मानित किया।

सिरसा

साध्वी सुमनश्री जी के सान्निध्य में मासखमण तपोभिनंदन का कार्यक्रम मनाया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण से हुआ।

शासनश्री साध्वी सुमनश्री जी ने कहा कि जब तपस्वी भाई विमल नोलखा को मासखमण का प्रत्याख्यान करवाया तो समस्त श्रावक समाज ने ॐ अर्हम् की ध्वनि से अनुमोदना की। साध्वीश्रीजी ने कहा कि जिस शहर में एक भी तपस्वी श्रावक हो वो जिन शासन का शृंगार है। तप स्वयं एक महाऔषधि है। तप से तपस्वी का आभामंडल पवित्र बन जाता है। वास्तव में इतना लंबा तप करना आज का आश्चर्य है। साध्वी सुरेखाजी, साध्वी मधुरलता जी, साध्वी मननप्रभाजी ने गीत के माध्यम से तपस्या का अभिनंदन किया। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष देवेंद्र डागा, श्रद्धानिष्ठ श्रावक हनुमानमल गुजरानी, शासन सेवी पद्मचंद गुजरानी, हरियाणा प्रांत के अध्यक्ष मक्खनलाल गोयल, तेयुप अध्यक्ष आनंद सुराणा, महिला मंडल अध्यक्ष सुमन गुजरानी, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष रविंद्र गोयल, अमित सिंघी, तपस्वी विमल की धर्मपत्नी सुंदरा देवी, पुत्र कुणाल, पुत्रियों व सुमन गुजरानी, कमल सुराणा ने तपस्या का अभिनंदन किया। ज्ञानशाला के बच्चों ने मनमोहक प्रस्तुति दी। मंच का संचालन तेरापंथ सभा के मंत्री राजेश पुगलिया ने किया।

सरदारशहर

साध्वी सुमतिप्रभाजी की प्रेरणा से कमला देवी दुगड़ ने २७ दिनों की निराहार तपस्या कर अपना मासखमण पूर्ण किया। साध्वी सुमतिप्रभाजी की सहवर्तिनी साध्वियों ने गीतिका द्वारा तपस्वी बहन की अनुमोदना की। साध्वी सुमतिप्रभाजी ने कहा कि यह इस चातुर्मास का पहला मासखमण है। सरदारशहर श्रावक समाज को तप में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

तेरापंथ सभा मंत्री राजीव दुगड़ ने अभिनंदन पत्र का वाचन किया। तपस्वी बहन को अभिनंदन पत्र, मोमेंटो एवं साहित्य सभा अध्यक्ष सिद्धार्थ चिंडालिया, सभा मंत्री राजीव दुगड़, सभा उपाध्यक्ष महेंद्र बरड़िया, महिला मंडल मंत्री संगीता बच्छावत, वरिष्ठ श्रावक सुजानमल दुगड़ ने भेंट किए।

तपस्वी बहन की अनुमोदना में सभा अध्यक्ष सिद्धार्थ चिंडालिया, अणुव्रत समिति उपाध्यक्ष सुमन भंसाली, महिला मंडल मंत्री संगीता बच्छावत, ज्ञानशाला की तरफ से कमला देवी गधैया, माया देवी जम्मड़, पुष्पा मिन्नी आदि ने तप की अनुमोदना की। पोती साक्षी दुगड़ ने भी अपनी दादी के लिए अपनी भावनाएँ व्यक्त की।

सम्यक् दर्शन कार्यशाला से आध्यात्मिक ज्ञान का विकास संभव

जसोल।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप के तत्त्वावधान में शासनश्री साध्वी सत्यप्रभाजी के सान्निध्य में १५ दिवसीय सम्यक् दर्शन कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। सर्वप्रथम कार्यशाला के किट का अनावरण किया गया।

तेयुप अध्यक्ष तरुण भंसाली ने सम्यक् दर्शन कार्यशाला की महत्त्वपूर्ण जानकारी दी। मंत्री अमित सुराणा ने बताया कि यह कार्यशाला आचार्यश्री महाश्रमण जी की कृति 'भगवान ने कहा' पुस्तक पर आधारित है।

शासनश्री साध्वी सत्यप्रभाजी ने जसोल के श्रावक समाज से कार्यशाला में भाग लेने के लिए आह्वान किया। किट का अनावरण व बैनर का विमोचन तेरापंथ सभा अध्यक्ष उषभराज तातेड़, मंत्री कांतिलाल ढेलड़िया, तेयुप अध्यक्ष तरुण भंसाली, मंत्री अमित सुराणा, निवर्तमान अध्यक्ष जितेंद्र मांडोत, मंत्री दिनेश वडेरा, वर्तमान तेयुप उपाध्यक्ष मनीष बोकड़िया, रोनक भंसाली आदि अनेक पदाधिकारीगण उपस्थित थे।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
15 - 21 अगस्त, 2022

✦ *अहिंसा की साधना के लिए अपेक्षित है व्यक्ति अपने क्रोध पर नियंत्रण का प्रयास करे।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

जैन विद्या परीक्षा परिणाम घोषणा व पारितोषिक वितरण

आमेट।

तेरापंथ भवन में साध्वी प्रांजलप्रभाजी के सान्निध्य में समण संस्कृति संकाय द्वारा आयोजित जैन विद्या परीक्षा के आमेट के परीक्षार्थियों के परिणाम की घोषणा व पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने कहा कि जैन विद्या की परीक्षाएँ जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर के सिद्धांतों एवं जैन दर्शन को जानने, समझने एवं ज्ञान के विकास का सशक्त माध्यम है।

जैन विद्या परीक्षा से नॉलेज पावर बढ़ता है। जैन विद्या संयोजक विपुल पीतलिया ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

तेरापंथी सभा मंत्री ज्ञानेश्वरी मेहता ने प्रभारी व परीक्षा में उत्तीर्ण विद्यार्थी को शुभकामनाएँ दी। देवेंद्र पीतलिया ने परीक्षार्थियों के परिणाम की घोषणा की।

पारितोषिक के प्रायोजक हस्तीमल पामेचा, पवन पामेचा ने उत्तीर्ण विद्यार्थियों को पारितोषिक प्रदान किए।

तेरापंथ सभा अध्यक्ष देवेंद्र मेहता, मनोहरलाल दुगड़, महेंद्र हिरण, तेयुप अध्यक्ष पवन कच्छारा, तेमम अध्यक्षा मीना गेलड़ा, मंत्री संगीता पामेचा, सायर देवी पामेचा, वैशाली हिरण आदि श्रावक समाज की उपस्थिति रही।

जैन विद्या परीक्षा प्रमाण पत्र वितरण समारोह

पुणे।

साध्वी काव्यलता जी के सान्निध्य में जैन विद्या परीक्षा प्रमाण पत्र वितरण समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत ज्ञानशाला विद्यार्थी मैत्री जैन द्वारा मंगलाचरण से की गई। साध्वीश्री जी ने जैन विद्या में अर्हता प्राप्त करने एवं परीक्षा देने की प्रेरणा प्रदान की।

केंद्र व्यवस्थापक द्वारा जैन विद्या परीक्षा के प्रारूप के बारे में जानकारी दी गई। पुणे, पिंपरी चिंचवड़, आंचलिक संयोजिका नीलम चोरड़िया ने अंचल में चल रहे समण संस्कृति संकाय के कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी एवं साध्वीश्री का आभार व्यक्त किया। समण संस्कृति संकाय द्वारा २२वें जैन विद्या दीक्षांत समारोह, छापर में गुरुदेव के सान्निध्य में नीलम चोरड़िया को श्रेष्ठ आंचलिक संयोजिका के रूप में सम्मानित होने पर तेरापंथ समाज, पुणे की तरफ से बधाई दी गई।

तेरापंथी सभा, पुणे के तत्त्वावधान में जैन विद्या परीक्षा-२०२१ के ६६ प्रमाण पत्र वितरित किए गए। सभा, तेयुप, महिला मंडल पदाधिकारियों द्वारा प्रमाण पत्र का वितरण करवाया गया।

प्रतिक्रमण कार्यशाला का आयोजन

हुबली।

मुनि हिमांशु कुमार जी, मुनि हेमंत कुमार जी के सान्निध्य में अभातेमम के निर्देशानुसार महिला मंडल द्वारा प्रतिक्रमण कार्यशाला का आयोजन किया गया। मुनि हिमांशु कुमार जी ने मंगलाचरण का प्रारंभ नमस्कार महामंत्र से किया। मुनि हिमांशु कुमार जी ने कहा कि तीन प्रकार के व्यक्ति होते हैं–पहला कभी भूल नहीं करता, दूसरा भूल तो करता है पर तत्काल समझ जाता है, तीसरा गलती पर गलती तो करता है पर समझता नहीं, बदलाव नही करते।

उन्होंने परिष्कार का अर्थ समझाते हुए कहा कि आत्म चिंतन के दर्पण में मन को स्थिर करना चाहिए, कैसे हम अपने जीवन में परिष्कार कर सकते हैं, वाणी की शुद्धि, व्यवहार की शुद्धि और विचार की शुद्धि के आधार पर अपने जीवन में परिवर्तन कर सकते हैं, जो भविष्य को उज्ज्वल बनाना चाहता है वह प्रतिक्रमण के माध्यम से बदलाव ला सकता है।

मुनि हेमंत कुमार जी ने परिष्कार शब्द का अर्थ बड़ी गहराई से समझाया। स्वयं अपने दोषों को खोजो, उन्हें परिष्कार द्वारा दूर करने का प्रयत्न करो। भाव प्रतिक्रमण भी बहुत बड़ा बदलाव ला सकता है। सोने से पहले भाव प्रतिक्रमण का लक्ष्य अवश्य रखें, प्रतिक्रमण के माध्यम से भ्रमण सीमित कर सकते हैं, कार्यशाला में महिला मंडल के सदस्यों की अच्छी उपस्थिति रही। दूसरे संप्रदाय की महिलाओं ने भी भाग लिया। ज्ञानशाला ज्ञानार्थी सभा के पदाधिकारी, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष अमोलक चंद बागरेचा और अखिल भारतीय तेरापंथ सभा के सदस्य रमेश चोपड़ा, तेयुप के सदस्यों एवं कन्या मंडल और किशोर मंडल की उपस्थिति रही।

दीक्षार्थिनी बहन का अभिनंदन समारोह

राउरकेला।

तेरापंथ भवन में तारानगर निवासी हावड़ा प्रवासी मुमुक्षु रोशनी लुणिया का अभिनंदन समारोह मनाया गया। मुमुक्षु रोशनी भौतिक सुखों को त्यागकर संयम पथ पर बढ़ते हुए ६ सितंबर को छापर में जैन साध्वी दीक्षा लेने जा रही है।

कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण से की गई। सभा के अध्यक्ष छगन जैन, भूतपूर्व अध्यक्ष मांगीलाल बोथरा, स्वरूपचंद बोथरा और महिला मंडल की अध्यक्षा सरोज गोलछा ने अपने वक्तव्य के द्वारा दीक्षार्थिनी बहन का स्वागत किया तथा संयम के मार्ग पर चलने का पथ चुनने के लिए अनुमोदना की।

महिला मंडल की बहनों ने स्वागत गीतिका का संगान किया। मुमुक्षु के भाई ने उनका परिचय दिया। तत्पश्चात मुमुक्षु बहन ने अपने वक्तव्य में बताया कि यह कोई पिछले जन्म के पुण्य कर्मों का ही संयोग है कि मेरे मन में वैराग्य भावना जागृत हुई और मैंने दीक्षा लेने का संकल्प किया। मेरे परिवार वालों ने भी मेरा पूर्ण सहयोग दिया। मुमुक्षु ने गुरुदेव के प्रति भी अपनी अत्यंत कृतज्ञता ज्ञापित की कि उन्होंने मेरी दीक्षा आगामी ६ सितंबर को फरमाई। साथ ही सबको अपनी अनुकूलता अनुसार त्याग भी करवाए।

महिला मंडल, सभा व अन्य परिवारजनों ने मुमुक्षु की झोली भरी, उनके माता-पिता का भी अभिनंदन किया। तत्पश्चात कमला बैद ने सुमधुर भजन गाकर समा बाँध दिया। लक्ष्मीपत दुगड़ ने स्वरचित भजन गाया। कार्यक्रम का संयोजन मंत्री संगीता दुगड़ ने किया। कार्यक्रम का आयोजन मुमुक्षु रोशनी की मौसी कमला-धनपत बैद ने की।

✦ *उपदेश सुनने की भावना भी अच्छी बात है। उपदेश की सौ बातें सुनी जाएँगी तो उसमें से दो-चार बातें जीवन में हृदयंगम भी हो सकती हैं, उतर भी सकती हैं।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

संघ के प्रति कार्यकर्ता का दायित्व कार्यशाला

जाटाबास, जोधपुर।

शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य में संघ के प्रति कार्यकर्ता का दायित्व कार्यशाला का आयोजन किया गया। शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी के नमस्कार महामंत्रोच्चार से कार्यक्रम की शुरुआत की गई। मंगलाचरण महिला मंडल की सदस्या सरिता गेलड़ा, सरिता डोसी एवं निर्मला समदड़िया ने भिक्षु अष्टकम से किया। स्वागत भाषण सभा अध्यक्ष पन्नालाल कागोत एवं अतिथि परिचय डॉ० उम्मेद राज तातेड़ ने किया।

साध्वी कंचनरेखाजी ने अपने विचार अभिव्यक्त किए। मुख्य अतिथि ने कहा कि महासभा उपाध्यक्ष विजयराज मेहता ने कहा कि कार्यकर्ता को हमेशा संघ एवं संघ पति के प्रति समर्पित रहना चाहिए। मुख्य वक्ता संयोजक स्मारक सुरक्षा समिति महासभा मर्यादा कुमार कोठारी ने वक्तव्य में कहा कि कार्यकर्ता अपने अधिकारों का अतिक्रमण न करके कर्तव्य के प्रति जागरूक रहने की प्रेरणा दी। कार्यकर्ता सहनशील, श्रमशील एवं संघ के लिए समर्पित रहे।

शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी ने कहा कि संघ से समाज में विकास का दायित्व कार्यकर्ताओं पर निर्भर है। कार्यकर्ताओं का नेतृत्व सक्षम होना चाहिए। क्योंकि उनका स्थान महत्त्वपूर्ण होता है। समाज उनके कार्यों का मूल्यांकन करता है, समाज में कार्यकर्ता जितने शक्तिशाली होंगे समाज उतना ही विकास करेगा। कार्यकर्ता अपना दायित्व सम्यक् प्रकार निर्वहन करे, ओजस्वी, तेजस्वी, गौरवशाली, आदर्श कार्यकर्ता बने।

अतिथियों का सम्मान पनलाल कागोत, मंत्री दिलीप मालू, दीपचंद सुराणा, रतनलाल कागोत, राजकुमार गेलड़ा, देवेंद्र चौधरी एवं प्रसन्न चंद कांकरिया ने किया। आभार तेयुप के अध्यक्ष मितेश जैन एवं कार्यक्रम का संचालन सभा के सहमंत्री मुकेश चौधरी ने किया।

माणक गणी जॉन ज्ञानशाला की प्रस्तुति

विलेपार्ले (मुंबई)।

साध्वी राकेश कुमारी जी एवं सहवर्ती साध्वीवृंद के सान्निध्य में माणकगणी जॉन ज्ञानशाला परिवार का कार्यक्रम आयोजित किया गया। मंगलाचरण गोरेगाँव ज्ञानशाला द्वारा किया गया। ज्ञानशाला पर माणक गणी जॉन द्वारा मनमोहक प्रस्तुति दी गई। जिसका सभी ने ॐ अर्हम् की मंद ध्वनि से अभिवादन किया।

साध्वी राकेश कुमारी जी द्वारा प्रशिक्षक बहनों को अपने भीतर की प्रतिभा को पहचानने एवं ज्ञानशाला के विकास के बारे में प्रेरणा पाथेय प्रदान किया। साध्वीश्री जी के द्वारा ज्ञानशाला प्रशिक्षक बहनों को प्रश्न-उत्तर पूछे गए।

आभार ज्ञापन सुनीता दक द्वारा किया गया। कार्यशाला का संचालन जॉन की सह-संयोजिका भावना सांखला द्वारा किया गया। राजश्री कच्छारा, संयोजिका नीलम कोठारी, सह-संयोजिका भावना सांखला, सीमा, मीना सहित २८ प्रशिक्षक बहनों की उपस्थिति रही। स्वागत भाषण शिल्पा ने किया। राजश्री ने चल रही गतिविधियों के बारे में सभी को विस्तार से समझाया।

दंपत्ति कार्यशाला : कैसे हो संबंधों में मधुरता की सुवास

पीलीबंगा।

साध्वी रचनाश्री जी के सान्निध्य में तेयुप द्वारा दंपति कार्यशाला 'कैसे हो संबंधों में मधुरता की सुवास' का आयोजन किया गया। कार्यशाला में साध्वीश्री जी ने कहा कि संसार में व्यक्ति अकेला जन्म लेता है और अकेला मरता है, किंतु बीच के समय में संबंधों से जुड़ता है। परिवार, देश और समाज के साथ संबंध कैसा हो? इस पर चिंतन करना है। आपके दांपत्य जीवन की मधुर सुवास औरों के लिए प्रेरणास्पद बन सकती है।

कार्यशाला के प्रभारी निश्चल बांठिया ने बताया कि २१ दंपतियों ने कार्यशाला में भाग लिया और स्वस्तिक के आकार में बैठे कार्यशाला में संभागी दंपति और श्रोतागण को प्रेरणा देते हुए साध्वी चैतन्यप्रभाजी ने 'अ ब स द' अक्षरों के माध्यम से मधुर संबंध बनाए रखने की प्रेरणा दी। साध्वी कौशलप्रभाजी ने accept, adjust और appricate शब्दों की व्याख्या करते हुए प्रेरणा दी। साध्वी गीतार्थप्रभाजी ने प्रश्न-उत्तर का क्रम चलाया। साध्वीवृंद ने सुमधुर गीत के माध्यम से हैपी फैमिली के टिप्स बताए।

तेयुप के अध्यक्ष सतीश पुगलिया ने स्वागत भाषण दिया। कार्यक्रम में प्रतिभा दुगड़ ने कविता पाठ किया। कार्यशाला के प्रतिभागियों ने संयुक्त रूप से प्रतियोगिता में भाग लिया। जिसमें विजेता दंपति के रूप में तृतीय स्थान पर महेंद्र महिमा नौलखा, दूसरे स्थान पर भरत सुशीला नाहटा और प्रथम स्थान पर अमित निशा छाजेड़ रहे। कार्यशाला के अंत में आयोजित लकी ड्रॉ के विजेता सतीश प्रेम पुगलिया रहे। कार्यक्रम में मंगलाचरण का संगान किया सुमधुर गायिका प्रीति डाकलिया ने।

परम पूज्य आचार्य प्रवर की पावन सन्निधि...

(पृष्ठ १५ का शेष)

रात्रिकालीन सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती नीलमजी सेठिया ने जैन दर्शन, अनेकान्तवाद, तत्त्वज्ञान आदि के बारे में बताते हुए किशोरों को अपने जीवन को अध्यात्म के साथ जोड़ने तथा जैन धर्म के मूलभूत सिद्धांतों को जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी।

रात्रिकालीन भक्ति संध्या में छोटे-छोटे किशोरों ने शास्त्रीय संगीतमय प्रस्तुतियां दीं। संगीत की जुगलबंदी में अनेक किशोर गायकों ने भाग लिया। प्रमुख गायक श्री ऋषि दूगड़, श्री दर्शन चोपड़ा, श्री दर्शन भंडारी एवं श्री प्रवीण मालू ने अपनी मधुर अध्यात्ममय स्वर लहरियों से किशोरों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

द्वितीय दिवस का प्रारम्भ 'फिट युवा : हिट युवा' के अन्तर्गत प्रेक्षाध्यान के प्रयोगों के साथ हुआ। प्रथम सत्र छापर में परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में आयोजित हुआ। सफेद कुर्ता-पायजामा एवं रंग-बिरंगें दुपट्टों में राजस्थानी परिवेश में सजे सैंकडों किशोर एक भव्य रैली के साथ जब पूज्य चरणों में पहुंचे तो प्रवचन पंडाल 'जय जय ज्योति चरण : जय जय महाश्रमण' के उद्घोष से गूंज उठा।

१७वें राष्ट्रीय तेरापंथ किशोर मण्डल के अधिवेशन के संदर्भ में तेरापंथ किशोर मण्डल के राष्ट्रीय प्रभारी श्री विशाल पितलिया ने अवगति प्रदान की। भीलवाड़ा वर्चुअल अधिवेशन के अवसर पर परम पूज्य आचार्य प्रवर की पावन प्रेरणा के अनुसार तेरापंथ किशोर मण्डल के किशोरों ने **'चर्चा धारो रे'** प्राचीन गीत का संगान किया। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पंकज डागा एवं महामंत्री श्री पवन मांडोत ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। साध्वीप्रमुखाजी ने भी किशोरों को उत्प्रेरित किया। मुख्यमुनिश्री ने भी किशोरों को संबोधित किया। परम पूज्य आचार्य प्रवर को तेरापंथ किशोर मंडल का वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन निवेदित किया गया।

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने किशोरों को विशेष प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि किशोरावस्था ज्ञानार्जन, चारित्रिक निर्माण और विकास की अच्छी संभावना वाली होती है। किशोरों के अच्छे संस्कारों का विकास हो तो उनकी स्वयं की आत्मा के साथ दूसरों के लिए भी अच्छी बात हो सकती है। स्कूली शिक्षा के साथ धर्म और अध्यात्म की शिक्षा का विकास हो तो अच्छी बात हो सकती है। विद्वता, गुणवत्ता के साथ सभ्यता और संस्कारों का विकास हो तो विशेष बात हो सकता है। तीन वर्षों बाद किशोरों को अच्छा अवसर मिला है। हमारे सामने इतने किशोर बैठे हैं, वे स्कूल और क0लेजों आदि में पढ़ते हैं। वे समय निकालें और जैन दर्शन के सिद्धांतों को जानने का प्रयास करें। आचार्य महाप्रज्ञ की पुस्तक जैन दर्शन : मनन को मीमांसा उससे भी अनेक जानकारियां भी प्राप्त की जा सकती हैं। किशोर मण्डल के किशोरों में बुद्धि और प्रतिभा हो सकती है तो वे समय निकालकर जैन दर्शन, तेरापंथ के इतिहास आदि के सिद्धांतों को जानने और पढ़ने का प्रयास करें और जैन दर्शन के अच्छे जानकार, विद्वान, प्रवक्ता भी बनें और हिन्दी अथवा अंग्रेजी में भाषण दे सकें। ऐसे किशोर सामने आएं तो जैन दर्शन के विद्वान, प्रवक्ता बनने का प्रयास करें। किशोरों द्वारा प्रस्तुत गीत के लिए परम पूज्य आचार्य प्रवर ने आशीर्वाद प्रदान करते हुए पुनः तीन प्राचीन गीतों को कंठस्थ करने की प्रेरणा प्रदान की।

मध्यान्ह सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में प्रसिद्ध मोटिवेशनल स्पीकर श्री संजयजी रावल ने **'जीवन'** को व्याख्यायित करते हुए किशोरों को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में यह समझाने का प्रयास किया कि सर्वांगीण विकास करते हुए किस प्रकार जीवन जीया जाये।

सायंकालीन सत्र के अन्तर्गत जैन विश्व भारती स्थित आचार्य तुलसी स्मारक पर ७ से ८ बजे शनिवारीय सामूहिक सामायिक का क्रम रखा गया। सभी किशोरों ने उसमें अपनी सहभागिता दर्ज की।

रात्रिकालीन सत्र में अलग-अलग क्षेत्रों के चार सुप्रसिद्ध व्यक्तित्वों से पैनल चर्चा का क्रम आयोजित किया गया। जिसमें प्रसिद्ध युवा भारतीय क्रिकेटर श्री श्रेयश गोपाल, प्रख्यात लेखक डॉ नंदीतेश निलय, अभातेयुप के पूर्व अध्यक्ष और चार्टर्ड अकाउंटेंट श्री बी सी जैन (भलावत) एवं अभातेयुप के पूर्व अध्यक्ष और बिल्डर श्री विमल कटारिया से उनके जीवन के बारे में चर्चा की गई एवं उनसे जाना गया कि कैसे उन्होंने अपने जीवन में प्रगति के पायदानों को स्पर्श करते हुए व्यापक प्रतिष्ठा और प्रसिद्धि हासिल की। उनके साथ पैनल चर्चा किशोरों के लिए बहुत उपयोगी साबित हुई। इस सत्र में अभातेयुप के निवर्तमान अध्यक्ष श्री संदीप कोठारी भी विशेष रूप से उपस्थित थे।

किशोरों को राजस्थान की लोक संस्कृति से परिचित कराने के उद्देश्य से सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। किशोरों ने विभिन्न रचनात्मक तरीकों से अपने-अपने वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किए।

तृतीय दिवस का प्रथम सत्र तेरापंथ टास्क फोर्स के प्रशिक्षण सत्र के रूप में आयोजित किया गया, जिसमें प्रशिक्षक श्री श्रेणिक कुचेरिया द्वारा किशोरों को आपात स्थिति में कुछ प्राथमिक चिकित्सा तकनीकों के बारे में बताया गया। **'खतरों के खिलाड़ी'** शीर्षक से किशोर को अनेक मुश्किल टास्क दिए गए जिन्हें तय समय में पूरा करना था। सहभागी किशोरों ने बहुत उत्साह और बहादुरी का परिचय देते हुए अपना श्रेष्ठ प्रदर्शन देने का प्रयास किया। चयनित शीर्ष १० प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया।

लाडनूं में आयोजित विभिन्न सत्रों में जैन विश्व भारती सेवा केन्द्र में विराजित मुनिश्री विजयकुमारजी, अभातेयुप के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री योगेशकुमारजी आदि मुनिवृंद का पावन सान्निध्य एवं पाथेय प्राप्त हुआ। मुनिश्री योगेशकुमारजी ने किशोरों को प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि किशोरावस्था निर्माण की अवस्था होती है। इस अवस्था में सद्संस्कारों से जीवन की सही दिशा प्रशस्त की जा सकती है। हमें तेरापंथ जैसा गौरवशाली धर्मसंघ और परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी जैसे महातपस्वी आचार्य प्रवर का पावन साया और आध्यात्मिक संरक्षण प्राप्त है। ऐसे संघ और संघपति के प्रति प्रत्येक किशोर पूर्ण समर्पित रहे और अपने जीवन में अन्य क्षेत्रों में विकास के साथ समन्वित रूप से अध्यात्म की दिशा में भी विकास करते रहें। वार्षिक अधिवेशन में किशोरों को पूज्य प्रवर की पावन सन्निधि और उद्बोधन का लाभ मिलता है, जो पूरे वर्ष भर के लिए आपको ऊर्जा से भर देता है। मुनिश्री विजयकुमारजी ने उद्बोधन प्रदान करते हुए किशोरों को जीवन में सद्संस्कारी बने रहने की प्रेरणा दी।

मध्यान्ह एवं समापन सत्र के अन्तर्गत **'शार्प टैंक'** शीर्षक से कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमें अभातेयुप के पूर्व अध्यक्ष श्री बी सी जैन (भलावत), पूर्व अध्यक्ष श्री विमल कटारिया एवं सीपीएस के मुख्य प्रशिक्षक श्री अरविंद मांडोत ने अपनी स्टार्टअप्स की यात्रा के बारे में बताया और निर्णायक के रूप में उपस्थित तेरापंथ किशोर मंडल के पूर्व राष्ट्रीय प्रभारी श्री अर्पित नाहर ने भी अपने विचार व्यक्त किए। सभी के प्रति आभार ज्ञापन के साथ अधिवेशन का समापन हुआ।

देशभर के तेरापंथ किशोर मंडलों में से गत वर्ष सेवा, संस्कार और संगठन के क्षेत्र में से उत्कृष्ट कार्य करने वाले तेरापंथ किशोर मंडलों को सम्मानित किया गया। १ से २५ किशोरों की संख्या वाले किशोर मंडलों में सेवा में श्रीडूंगरगढ़, संस्कार में खारगढ़ एवं संगठन में लूणकरणसर विजेता रहे। २५ से ७५ किशोरों की संख्या वाले किशोर मंडलों में सेवा में बारडोली, संस्कार में रायपुर एवं संगठन में एचबीएचटी विजयी रहे। ७५ से अधिक किशोरों की संख्या वाले किशोर मंडलों में सेवा में उधना, संस्कार में चेन्नई एवं संगठन में जयपुर विजयी रहे। सभी कार्यों में अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु सेवा में भीलवाड़ा, संस्कार में पर्वत पाटिया एवं संगठन में दक्षिण मुंबई विजेता रहे। सेवा, संस्कार एवं संगठन तीनों में सर्वश्रेष्ठ तेरापंथ किशोर मंडल, सूरत रहा। विजेता किशोर मंडलों को मोमेन्टो प्रदान कर सम्मानित किया गया।

अधिवेशन में समागत किशोरों की आवास, भोजन, आयोजन आदि व्यवस्थाओं में जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री मनोज लूनिया के नेतृत्व में सभी कार्यरत कर्मियों का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। आवास की अन्य व्यवस्थाओं में रोहिणी भवन के लिए अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा श्रीमती नीलम सेठिया, आचार्य तुलसी भवन के लिए तेरापंथी सभा-लाडनूं के अध्यक्ष श्री प्रकाशचन्द बैद, हरियाणा भवन के लिए हरियाणा प्रांतीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री मखनलाल गोयल, घोसल गेस्ट हाउस के लिए श्री सुरेन्द्र घोसल आदि का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। अभातेयुप के सहमंत्री एवं अभातेयुप के संयोजक श्री अनंत बागरेचा के कुशल निर्देशन एवं तेरापंथ किशोर मंडल के राष्ट्रीय प्रभारी श्री विशाल पितलिया, सह-प्रभारी श्री मयंक धाकड़ के प्रबन्धन में ब्लू ब्रिगेड टीम ने विभिन्न व्यवस्थाओं के नियोजन में निष्ठापूर्ण श्रम किया। अभातेयुप लाडनूं कार्यालय टीम का पूर्ण सहयोग रहा।

अभातेममं के निर्देशन में तेममं...

(पृष्ठ १५ का शेष)

इस कार्यक्रम में Find you Wow NIP Trainer प्रज्ञा दुगड़ ने कन्याओं को बताया कि जिंदगी को Wow बनाने के लिए आत्मा, शरीर और मन को Worthy Outstanding और Welcoming रखना चाहिए। संगगायिका अभिलाषा बांठिया ने एक गीत के द्वारा अपनी प्रस्तुति दी। पूरे वर्ष में सभी क्षेत्र की कन्या मंडल के कार्यों का अवलोकन करते हुए उन्हें राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया, उपाध्यक्ष सरिता डागा, महामंत्री मधु देरासरिया, कन्या मंडल की राष्ट्रीय प्रभारी अर्चना भंडारी व संपूर्ण राष्ट्रीय कार्यकारिणी टीम द्वारा पुरस्कृत किया गया।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के छापर धरा पर अीातेममं के अंतर्गत अखिल भारतीय तेरापंथ कन्या मंडल का Spectrum १८वाँ अधिवेशन के तीसरे दिन के समापन सत्र के कार्यक्रम की शुरुआत रा०क०मं० के कन्याओं की प्रस्तुति के द्वारा हुई। राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया व महामंत्री मधु देरासरिया ने वार्षिक प्रतिवेदन गुरुदेव के श्रीचरणों में भेंट किया।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कन्याओं को मंगल उद्बोधन देते हुए कहा कि यदि आकर्षक बनना है तो सभी को अपने व्यवहार को शालीन व संस्कारों को अच्छा बनाना होगा। कन्या मंडल की राष्ट्रीय प्रभारी अर्चना भंडारी ने वर्ष भर में कन्या मंडल की शाखाओं द्वारा किए गए संपूर्ण कार्यों की जानकारी एवं Success graph की जानकारी गुरुदेव के सामने रखी। गुरुदेव ने कन्याओं को एक वर्ष के लिए कोई भी दो संकल्प करने की प्रेरणा दी। वृहद् मंगलपाठ से अधिवेशन सानंद संपन्न हुआ।

जैन विद्या प्रमाण पत्र वितरण समारोह

वाशी।

समण संस्कृति संकाय के तत्त्वावधान में एवं साध्वी पंकजश्री जी के सान्निध्य में जैन विद्या परीक्षा-२०२१ के प्रमाण पत्र वितरण कार्यक्रम, वाशी सभा भवन में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी पंकजश्री जी ने नमस्कार महामंत्र से किया। मंगलाचरण में जैन विद्या गीतिका की प्रस्तुति विज्ञ उपाधि धारक नीतू परमार, टीना कोठारी, सेजल सियाल, रीना चपलोत, इंदु बड़ाला ने की।

जैन विद्या वाशी के केंद्र व्यवस्थापिका तेममं संयोजिका इंदु बडाला ने स्वागत किया। साध्वीश्री जी ने कहा कि फार्म भरना महत्त्वपूर्ण नहीं फार्म भरकर परीक्षा में बैठना महत्त्वपूर्ण है। जैन विद्या की परीक्षा के लिए कोई उम्र नहीं होती है, आप कोई भी उम्र में जैन विद्या परीक्षा से जुड़ सकते हैं और अपने ज्ञान को बढ़ाने में जैन विद्या परीक्षा से जुड़ें।

वेस्टर्न जोन आंचलिक संयोजिका निर्मला नौलखा ने अपने वक्तव्य में आगम, जैन विद्या कार्यशाला और जैन विद्या के बारे में सूचना दी। सभी को जैन विद्या फार्म भरने से ज्यदा से ज्यादा संख्या में परीक्षा देने का आह्वान किया। तेरापंथी सभा, वाशी के अध्यक्ष विनोद बाफना ने जैन विद्या के बारे में विचार रखे।

कार्यक्रम को सफल बनाने में तेयुप अध्यक्ष महावीर सोनी, मंत्री महावीर हिरण एवं हार्बर लाइन की आंचलिक संयोजिका अनिता सियाल का योगदान रहा। कार्यक्रम का संचालन सह-केंद्र व्यवस्थापिका मेघना आच्छा, नीतू परमार ने किया।

बेंच का लोकार्पण समारोह का आयोजन

नालासोपारा (मुंबई)।

अभातेममं के निर्देशानुसार मुंबई महिला मंडल के तत्त्वावधान में महिला मंडल द्वारा एक बेंच का रेलवे स्टेशन पर लोकार्पण किया गया।

विशेष अतिथि के रूप में मुंबई महिला मंडल के अध्यखा रचना हिरण और सहमंत्री संगीता चपलोत पधारे। ब्राह्मण सेना राष्ट्रीय महिला प्रभारी नीता त्रिवेदी की उपस्थिति रही। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार मंत्र द्वारा की गई। मुंबई महिला मंडल के अध्यक्ष रचना हिरण ने बेंच का अनावरण किया। नालासोपारा कन्या मंडल एवं महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण की प्रस्तुति रही।

महिला मंडल संयोजिका वनीता सोलंकी ने अतिथियों का स्वागत किया। तेयुप के अध्यक्ष किशन कोठारी एवं सभा अध्यक्ष लक्ष्मीलाल मेहता ने अपने विचार रखे। मुंबई चातुर्मास समिति के अध्यक्ष मदन तातेड़ एवं अभातेयुप मंत्री भूपेश कोठारी सहित पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही। आभार सह-संयोजिका वर्षा धाकड़ ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
15 - 21 अगस्त, 2022

✦ *क्रोध दुर्बलता है। सामर्थ्य होते हुए भी नहीं मारना अहिंसा की साधना है। सक्षम होते हुए भी क्षमा करना बड़प्पन होता है।*
–आचार्यश्री महाश्रमण

व्यक्ति अनावश्यक पानी का व्यय न करें : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, २ अगस्त, २०२२

हमारी आस्था के अनन्य केंद्र आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आगम वाणी पर मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में प्रश्न किया गया कि भंते! सूक्ष्म स्नेहकाय सदा संगठित रूप में गिरता है। उत्तर दिया गया–हाँ गिरता है। जैन वाङ्मय और जैन आचार व्यवस्था में एक जल की बात आती है कि पानी ऊपर से सूक्ष्म रूप से गिरता रहता है। उसको आगम की भाषा में सूक्ष्म स्नेहकाय कहा गया है।

प्रश्न किया गया कि गिरता है, तो क्या वह ऊँचे लोक में, नीचे लोक में और तिरछे लोक में गिरता है। गौतम–वह तीनों लोक में गिरता है। प्रश्न किया गया कि जैसे बादल का स्थूल जल जैसे गिरता है, तो वह इकट्ठा होकर लंबे समय तक रह जाता है। वैसे ही यह सूक्ष्म जल जो गिरता है, वह इकट्ठा होकर कहीं रहता है, क्या? उत्तर दिया कि गौतम! यह अर्थ संगत नहीं है। वह सूक्ष्म काय जल जो गिरता है, वो शीघ्र ही विध्वंस को प्राप्त हो जाता है, टिकता नहीं है।

छः जीव निकायों में एक अपकाय है। अपकाय में अनेक रूपों में जल होता है। औस, हिम कुहासा, ओला आदि। सूक्ष्म स्नेह काय औस से भी सूक्ष्म जल होता है। वह निरंतर गिरता है। साधु रात को बाहर काम से जाते हैं, तो माथा ढककर चलते हैं, वो सूक्ष्म स्नेह काय गिरने के कारण करते हैं। अंदाज लगाया गया है कि सूक्ष्म स्नेह काय गिरता है, वो तमस्स काय से गिरता है। और पूरे वातावरण में व्याप्त हो जाता है। इस जल के प्रति भी अहिंसा की बात होती है।

श्रावकों को भी रात में सामायिक-पौषध में खुले में नहीं जाना चाहिए। अपकाय की हिंसा से बचने की हमारी एक परंपरा स्थापित है। जैन वाङ्मय में जल को सचित माना गया है। पानी स्वयं जीव है। यह स्थावर काय का जीव है। पानी ही उसका शरीर है। पानी की एक बूँद में असंख्य जीव होते हैं। इसलिए पानी का व्यय जहाँ तक हो कम करना चाहिए।

कुछ प्राचीन काल में तो पानी को लेकर कठिनाई हो जाती है कि पानी नहीं मिल रहा है। पानी की सीमा रखें, संयम रखें। उपलब्ध होने पर भी पानी का संयम रखें, यह एक प्रसंग से समझाया। इस तरह सूक्ष्म स्नेहकाय गिरने की बात बताई गई है। हमारे द्वारा उन जीवों की हिंसा न हो यह ध्यान रखें।

कालूयशोविलास की विवेचना करते हुए परमपूज्य ने फरमाया कि कालूगणी यात्रा कर रहे हैं, संघ का विकास कर रहे हैं। दीक्षाएँ प्रदान करवा रहे हैं। न्यारा में भी दीक्षा हो रही है। वि०सं० १९६७ का चतुर्मास करने सरदारशहर पधार रहे हैं। इस चौमासे में कालूगणी ने मुनि मगनलाल जी को विशेष बख्शीष करवाई है।

मुनि राजकुमार जी ने तपस्या की जानकारी दी। सुमन दुधेड़िया ने ११ की तपस्या के प्रत्याख्यान ग्रहण किए।

मुनि दिनेश कमार जी ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए समझाया कि बच्चे जैसी सरलता हमारे में होगी तो हम प्रभु को पा सकते हैं।

दंत चिकित्सा शिविर का आयोजन

भीलवाड़ा।

आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, भीलवाड़ा एवं पेसिफिक डेंटल कॉलेज एवं रिसर्च सेंटर उदयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में निःशुल्क दंत चिकित्सा एवं जाँच परामर्श शिविर का आयोजन तेयुप संस्था द्वारा श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व० छगनलाल गोखरू की पुण्य स्मृति में किया गया।

अध्यक्ष कमलेश सिरोहिया ने बताया कि शिविर का शुभारंभ भाजपा जिलाध्यक्ष लादूलाल तेली, प्रायोजक शांतिलाल, पंकज कुमार गोखरू, टीपीएफ राष्ट्रीय सहमंत्री नवीन वागरेचा, राष्ट्रीय कोर कमिटी सदस्य गौतम दुगड़, तेयुप मंत्री राजू कर्णावट एवं एटीडीसी प्रभारी अमित मेहता ने किया।

आचार्य तुलसी डेंटल केयर की डॉ० सोनाली चौधरी एवं पेसेफिक कॉलेज के डॉ० संदीप जैन के नेतृत्व में उनकी पूरी टीम ने ११८ रोगियों का चिकित्सा उपचार एवं परामर्श प्रदान किया गया। साथ ही निःशुल्क ब्लड शुगर की जाँच भी की गई और प्रत्येक रोगी को कोलगेट डेंटल पेस्ट एवं कालगेट टूथब्रश का वितरण किया गया।

एटीडीसी प्रभारी अशोक बुरड़ ने बताया कि शिविर में डॉक्टरों की टीम द्वारा दाँतों को निकालना, दाँतों के छेद को भरना, दाँतों की सफाई करना, दाँत एवं मुख संबंधित बीमारियों का परीक्षण किया गया।

शिविर का समापन आचार्य महाश्रमण चातुर्मास समिति भीलवाड़ा के पूर्व महामंत्री निर्मल गोखरू के आतिथ्य में पेसिफिक कॉलेज उदयपुर से आई डॉक्टरों की टीम का उपरना पहनाकर स्वागत किया गया।

कार्यक्रम में पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति एवं सहयोग रहा। मंत्री राजू कर्णावट ने सभी का आभार व्यक्त किया।

अभिनव अंताक्षरी प्रतियोगिता

गंगाशहर।

तेयुप के द्वारा अभिनव अंताक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन शांति निकेतन के प्रांगण में साध्वी कीर्तिलता जी के सान्निध्य में हुआ। प्रतियोगिता का शुभारंभ साध्वीश्री जी द्वारा मंगलाचरण गीतिका के माध्यम से हुआ।

तेयुप सहमंत्री मांगीलाल बोथरा ने बताया कि सात टीमों के मध्य रोचक व आध्यात्मिक वातावरण में विभिन्न चरणों के उपरांत टॉप तीन टीमों का चयन प्रतियोगिता में विजेता के तौर पर किया गया, सभी विजेताओं को टीम तेयुप द्वारा पुरस्कृत किया गया। प्रथम विजेता टीम में मोनिका संचेती, प्रियंका सांड, प्रज्ञा सेठिया, प्रिया संचेती रहे।

प्रतियोगिता में अभूतपूर्व दो पूर्व तेयुप अध्यक्षों राजेंद्र बोथरा और पवन छाजेड़ ने निर्णायक की भूमिका निभाई। समय का मूल्यांकन संजय सिंघी व कुशल बाफना द्वारा किया गया। तेयुप अध्यक्ष अरुण नाहटा ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी श्रेष्ठप्रभाजी और तेयुप मंत्री भरत गोलछा द्वारा किया गया। मंगलपाठ के साथ प्रतियोगिता संपन्न हुई।

निःशुल्क डेंटल चेकअप कैंप का आयोजन

उधना।

तेयुप द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, भेस्तान पर दंत चिकित्सा विभाग की सेवा का लाभ जन-जन तक पहुँचे उस उद्देश्य से संपूर्ण जुलाई माह में प्रति शुक्रवार निःशुल्क डेंटल चेकप कैंप के द्वितीय कैंप का आयोजन किया गया।

द्वितीय कैंप में अनुभवी डॉक्ट एवं सर्जन डॉ० ऋषिकेश देसाई ने ६ पेशेंट का निःशुल्क चेकअप कर उन्हें उचित परामर्श एवं समाधान प्रदान करवाया।

इस कैंप के आयोजन में सहमंत्री रौनक श्रीश्रीमाल, एटीडीसी भेस्तान प्रभारी कमलेश दुगड़, एमबीडीडी प्रभारी जिम्मी पितलिया ने विशिष्ट श्रम एवं समय नियोजन कर संपादित किया।

वित्त सुरक्षा की अपेक्षा चारित्र रूपी वृत की...

(पृष्ठ १६ का शेष)

श्रावक जो बाल पंडित है, वह श्रद्धावान हो। यथार्थ के प्रति श्रद्धा हो। जो जिनेश्वर भगवान ने प्रवेदित किया वो सत्य ही है। देव, गुरु, धर्म के प्रति श्रद्धा हो। श्रावक अपने आपमें पदवी है। और पद जीवन भर रहे न रहे पर श्रावक तो जीवन भर रहा जा सकता है। श्रावकत्व का पद आगे भी काम आ सकेगा। संस्थाओं में श्रावक कार्यकर्ता हो। श्रावक की आगे देवगति ही है।

कालूयशोविलास की विवेचना करते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि परमपूज्य कालूगणी के जीवन में आकर्षण था। उसका उदाहरण है, हरमन जैकोबी जो बहुत बड़े विद्वान व्यक्ति थे। वे पहले वि०सं० १९२८ में भारत आए थे, बाद में वि०सं० १९७० में भारत में आए थे। उस समय जोधपुर में जैन साहित्य सम्मेलन हुआ था। जोधपुर में चुरू निवासी केशरीचंद कोठारी उनसे मिले, बातचीत की और तेरापंथ और पूज्यकालूगणी के बारे में बताया और उनसे मिलने को कहा। सारी बात समझकर जैकोबी लाडनूं में कालूगणी से मिले।

जैकोबी पूज्य कालूगणी के दर्शन कर बहुत प्रभावित होते हैं। तेरापंथ के सिद्धांतों को वे ध्यान से समझते हैं। तेरापंथ की साधुचर्या, तेरापंथ दर्शन और तेरापंथ दीक्षा समारोह से वे बहुत प्रभावित होते हैं। साधु-साध्वियों की कलाकृतियाँ एवं हस्तलिखित प्रतिलिपियाँ दिखाई गई। सूक्ष्म अक्षर लिखे पत्र दिखाए तो वे चकित होते हैं। जैन आगमों से संबंधित जिज्ञासा रखते हैं। कालूगणी उनकी जिज्ञासा का विस्तार से समाधान करते हैं। तीन दिन बाद वे जाने लगे तो जन सभा में कालूगणी की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं कि मुझे नई जानकारियाँ मिली हैं। मेरे को तेरापंथ के विषय में पहले से जानकारी होती तो मैं दो सप्ताह का समय लेकर आता। जुनागढ़ में विद्वानों की सभा में उन्होंने तेरापंथ एवं कालूगणी का उल्लेख किया था। इस भारत यात्रा में मुझे तीन चीजें अविस्मरणीय होती हैं–(१) भगवान महावीर के समय की साधुचर्या को प्रत्यक्ष देखने का अवसर मिला। (२) जैन आगम के पाठ का तर्क संगत अर्थ मिला। (३) मैंने सपत्नीक दीक्षा देख ली।

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

✦ *वित्तीय उत्थान के साथ-साथ वृत्त की शुचिता को वृद्धिंगत करने का भी प्रयास किया जाए तो स्वस्थ समाज की संरचना की दिशा में प्रस्थान हो सकता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
15 - 21 अगस्त, 2022

तेरापंथ किशोर मंडल के १७वें राष्ट्रीय अधिवेशन का भव्य आयोजन

परम पूज्य आचार्य प्रवर की पावन सन्निधि एवं उद्‌बोधन से तृप्त हुए किशोर

छापर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ किशोर मंडल का १७वां राष्ट्रीय अधिवेशन दिनांक २९-३०-३१ जुलाई २०२२ को छापर एवं लाडनूं में आयोजित हुआ, जिसमें देश भर के ८० किशोर मंडलों से लगभग ७०० किशोरों की उपस्थिति रही।

तेरापंथ की राजधानी और जैन विश्व भारती के पवित्र प्रांगण में दिनांक २९ जुलाई २०२२ को प्रातः ६.३० बजे अभातेयुप के कर्मठ एवं ऊर्जावान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पंकज डागा द्वारा जैन ध्वजारोहण के साथ अधिवेशन का आगाज हुआ। अभातेयुप के उपाध्यक्ष प्रथम श्री रमेश डागा, महामंत्री श्री पवन मांडोत, सहमंत्री प्रथम श्री अनंत बागरेचा, कोषाध्यक्ष श्री भरत मरलेचा, संगठन मंत्री श्री श्रेयाँस कोठारी, प्रबुद्ध विचारक श्री नवीन बैंगानी, आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर के राष्ट्रीय प्रभारी व तेरापंथ किशोर मंडल के पूर्व राष्ट्रीय प्रभारी श्री अर्पित नाहर, तेरापंथ किशोर मंडल के राष्ट्रीय प्रभारी श्री विशाल पितलिया, राष्ट्रीय सहप्रभारी श्री मयंक धाकड़ आदि की गरिमामय उपस्थिति में अधिवेशन का शुभारंभ हुआ।

सुधर्मा सभा में आयोजित उद्‌घाटन सत्र में अध्यक्षीय उद्‌बोधन प्रदान करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पंकज डागा ने देशभर से उपस्थित किशोरों का अभातेयुप परिवार की ओर से स्वागत एवं अभिनंदन किया। उन्होंने किशोरों को जीवन में संस्कारों के साथ आगे बढ़ते हुए संघ व संघपति के प्रति सदैव समर्पित रहने की प्रेरणा दी। उन्होंने किशोरों को संगठन की विभिन्न आध्यात्मिक और सामाजिक गतिविधियों के माध्यम से अपना व्यक्तित्व निखारने की बात कही।

अभातेयुप के सक्रिय महामंत्री श्री पवन मांडोत ने कहा कि अधिवेशन के माध्यम से किशोरों को गुरु सन्निधि का तो विशेष लाभ प्राप्त होगा ही, इसके साथ ही इस बार लाडनूं में अधिवेशन होने के कारण सहज ही अनेकों किशोरों को प्रथम बार जैन विश्व भारती एवं अभातेयुप के केंद्रीय कार्यालय, भवन आदि के अवलोकन का अवसर प्राप्त हो रहा है। उपस्थित किशोर अपने जीवन में सर्वांगीण विकास का संकल्प ग्रहण करें। Quizoholic शीर्षक से विभिन्न ज्ञानवर्धक प्रतियोगिताएं आयोजित हुई। ५ राउण्ड में आयोजित इन प्रतियोगिताओं में ५०० से अधिक किशोरों ने भाग लिया। शीर्ष ३ टीमों का चयन किया गया। फाइनल में प्रत्येक टीम में पैन इंडिया के ३ किशोर थे। दर्शकों की ओर से चयनित सबसे सक्रिय किशोर मण्डल को पुरस्कृत किया गया। उत्साह और रोमांच से भरी प्रतियोगिताओं के साथ प्रथम सत्र का समापन हुआ।

एक सत्र Ad Zap शीर्षक से मार्केटिंग पर आधारित एक इवेंट के रूप में आयोजित किया गया। जिसमें किशोरों के कौशल व क्षमता को किसी उत्पाद विशेष हेतु टैग लाइन बनाने, किसी विशेष उत्पाद को बेचने के लिए अधिनियम बनाने आदि के बारे में प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें किशोरों की रचनात्मकता, प्रदर्शन और समय के उपयोग के आधार पर मूल्यांकन किया गया। इस प्रतियोगिता के विजेता के रूप में शीर्ष तीन टीमों को पुरस्कृत किया गया। अभातेयुप के पदाधिकारियों ने अलग-अलग विषयों पर किशोरों को प्रेरित किया।

(शेष पृष्ठ १३ पर)

अभातेममं के निर्देशन में तेरापंथ कन्या मंडल के १८वें राष्ट्रीय अधिवेशन का आयोजन

छापर।

छापर की धरा पर आचार्यश्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में अभातेममं के तत्त्वावधान में अखिल भारतीय कन्या मंडल के १८वें अधिवेशन का आगाज हुआ। पूरे भारत वर्ष से लगभग पाँच सौ कन्याओं की अधिवेशन में सहभागिता रही। अभातेममं की राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया के साथ संपूर्ण टीम की उपस्थिति रही। मंगलाचरण आमेट कन्या मंडल द्वारा किया गया। आचार्यश्री महाश्रमण जी ने सभी कन्याओं को प्रेरणा देते हुए फरमाया कि भक्तांबर व पुरानी गीतिका सभी को आनी चाहिए। कन्याओं की जिज्ञासाओं का समाधान किया। कन्याओं ने अपनी जिज्ञासा में पूछा कि वैराग्य की भावना कैसे जागृत होती है, गुस्सा कैसे शांत होता है, कैसे हम अपने जीवन को बिना किसी गलत राह पर चलकर कामयाब बनाएँ। गुरुदेव ने सभी कन्याओं की जिज्ञासाओं का समाधान दिया और कहा कि हम जो भी काम करें, नैतिक मूल्यों के साथ करें। गुस्सा न करें मन को समझाते रहें, समता से रहें, साधु-साध्वियों के सान्निध्य में रहकर भी वैराग्य की भावना को प्रबल कर सकते हैं और कामयाब बन सकते हैं।

द्वितीय दिवस इंदौर कन्या मंडल द्वारा मंगलाचरण, साध्वीप्रमुखाश्री जी का संदेश वाचन कार्यकारिणी सदस्या लता जैन के द्वारा राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया ने वीडियो के माध्यम से New Dimension of Jainism के बारे में जानकारी दी। समणी नियोजिका अमलप्रज्ञा जी ने कन्याओं को उद्‌बोधन देते हुए कहा कि जिंदगी को खुशनुमा कैसे बनाया जाए। मुमुक्षु सोनल बाई ने सुंदर गीतिका का संगान किया। मोटिवेशनल स्पीकर अनुराग ऋषि ने सभी कन्याओं को Enjoy doing your owrk by choice not by chance, with smile n energy के बारे में समझाया। अनुराग ऋषि का सम्मान राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम महामंत्री मधु देरासरिया ने किया।

तीसरे सत्र She Inspire - Infinite possibilities of 3Ex show में Bike Rider नीतू चोपड़ा, कुश्ती चेंपियन बबिता फोरगाट, हेल्थ कोचर डॉ० निधि नाहटा, लाइफ कोच डॉ० शिखा ऋषि ने सभी अपने कामयाब जीवन के अनुभवों को सभी कन्याओं के साथ साझा किया। राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्या वंदना बरड़िया ने Solution Junction के साथ Panelist moderator के माध्यम से कन्याओं की जिज्ञासा का समाधान किया। राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य शिल्पा बैद ने Gratitude Challenge के बारे में बताया। चार Panelist का सम्मान राष्ट्रीय अध्यक्षा नीलम सेठिया, उपाध्यक्षा सरिता डागा, महामंत्री मधु देरसारिया, निवर्तमान अध्यक्षा पुष्पा बैद, कन्या मंडल प्रभारी अर्चना भंडारी, सहमंत्री निधि सेखानी ने किया। Infinite possibilities - Transformation में मंगलाचरण रायपुर कन्या मंडल द्वारा किया गया।

(शेष पृष्ठ १३ पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
15 - 21 अगस्त, 2022

✦ *सत्य के मार्ग पर चलने में परेशानी आ सकती है, किंतु सच्चाई के मार्ग पर चलने से मिलने वाली मंजिल सुखद होती है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

१८वें तेरापंथ कन्या मंडल राष्ट्रीय अधिवेशन 'स्पेक्ट्रम' का आयोजन

पापकर्मों से भारी आत्मा अधोगति में जाती है : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, ८ अगस्त, २०२२

विज्ञा वारिधी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में प्रश्न किया गया कि प्राणी-जीव गुरुता, भारीपन को कैसे प्राप्त करते हैं। उत्तर दिया गया कि जीव भारी प्राणातिपात आदि १८ क्रियाओं से होता है। एक दृष्टि से देखें तो आत्मा क्या भारी होगी, क्या हल्की होगी। पाप कर्म करने से २ किलो वजन आत्मा का बढ़ जाए, ऐसा संभव नहीं है। पर सामान्य रूपेण भारी चीज नीचे जाती है।

व्यवहार की भाषा में देखें कि जीव का भारी होना, जिन क्रियाओं से जीव नीचे अधोगति में जाता है, रूप में पापों से भारी जीवनता है। १८ पापों से हिंसा आदि करने वाला राग-द्वेष कर आत्मा को पाप से भारी बना लेता है।

दूसरा प्रश्न किया गया कि फिर जीव लघुता को कैसे प्राप्त करता है? उत्तर दिया गया कि हे गौतम! ये जो प्राणातिपात आदि १८ पाप हैं, इनके विरमण से जीव लघुतापन को प्राप्त करता है। साधु के इन सावद्य योगों के त्याग होते हैं। साधु के तो विरमण होता है, तो वह मोक्ष में जाएगा या देवलोक में जाएगा। हल्की आत्मा तो ऊपर ही जाएगी। भारी आत्मा नीचे जाती है।

और भी बातें आई हैं कि जीव संसार में परिमितता को कैसे प्राप्त करता है। अपरिमितता कैसे कर लेता है। संसार में भ्रमण क्यों करता है। सारी बातों का एक ही कारण है कि १८ क्रियाओं का सेवन करने से संसार में भ्रमण होता है। इनका विरमण करने से संसार से मुक्ति मिल जाती है। इनके सेवन से संसार अपरिमित और विरमण से परिमित बन जाता है।

शास्त्र में एक सिद्धांत की बात बता दी गई है कि १८ ही क्रियाएँ हैं, इनका

सेवन आत्मा के लिए संसार को बढ़ाने वाला, जीव को भारी बनाने वाला, संसार को अपरिमित बनाने वाला बन जाता है। इन अठारह के त्याग से इससे उल्टी बातें होंगी।

साधु के तो जीवन भर सावद्य प्रवृत्ति के त्याग होते हैं। गृहस्थ क्या करें? गृहस्थ इनका अल्पीकरण करने का प्रयास करे। ज्यों-ज्यों उम्र बढ़े और विरमण की दिशा में आगे बढ़े। आदमी को उम्र के अनुसार समय-समय पर मोड़ लेना चाहिए। परिष्कार करना चाहिए। निवृत्ति की दिशा में आगे बढ़ें। विरमण की साधना आगे बढ़े। रोज १४ नियम चितारें।

गृहस्थ जीवन में समता रहे। झूठ से बचें। साधुओं की सेवा से धर्म का लाभ मिल सकता है। जैन-अजैन कोई हो, जीवन में जितना त्याग-संयम बढ़ेगा, उतनी आत्मा हल्की होगी। गुरुदेव तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ जी ने यात्राएँ की। अनेक लोगों से संपर्क हुआ उस समय जो प्रवचन श्रवण से संबोध मिलता है और लोग उसको ग्रहण कर लेते हैं, तो उनके जीवन में परिष्कार घटित हो जाता है। पापात्माएँ भी पाप के कार्य को छोड़ धर्म की दिशा में आगे बढ़ने लग जाते हैं। त्यागी संतों से सन्मार्ग मिल सकता है।

अणुव्रत तो हर समाज के लोगों के लिए उपयोगी है। नास्तिक भी अणुव्रती बन सकता है। साधु भी ध्यान रखे कि मेरे इन १८ क्रियाओं का सेवन न हो जाए। साधु प्रमाद में न रहे। हिंसा-अहिंसा में वीतरागता और चेतना की बात होती है, तो बहुत बचाव हो सकता है। हिंसा अधोगति का रास्ता है। हम उस मार्ग पर न चलें। साधु के सदुपयोग से कितनों का कल्याण हो जाता है।

कालू यशोविलास का विवेचन करते हुए धर्मज्ञाता ने फरमाया कि बाल दीक्षा के संबंध में श्रावकों ने लालाजी से भेंट की और जैन धर्म तेरापंथ की बात बताई। सिद्धांतों की बात बताई। लाला सुखबीर सिंह जी बात सुनकर प्रभावित हुए और आश्वासन देते हुए कहा कि मैं आपके गुरु के दर्शन करना चाहता हूँ। ऐसे भी गुरुजी हैं क्या? लालाजी ब्यावर में पूज्य कालूगणी के दर्शन कर, संपर्क कर बात करते हैं। सजोड़े दीक्षा का अवसर भी देख लिया। नीति-रीति को भी समझ लिया। उन्होंने कहा कि मैं नाबालिक दीक्षा कानून में ऐसा संशोधन कर दूँगा कि वो तेरापंथ पर लागू नहीं होगा। उस समय विश्व युद्ध शुरू हो जाता है और वह बिल पेंडिंग हो जाता है। अनेक कठिनाइयाँ कालूगणी के समय आई पर उनकी पुण्यवाणी से सब ठीक हो गया। श्रावक समाज भी कितना जागरूक रहा है। ये खास बात है। तेरापंथी महासभा का जन्म कालूगणी के शासन में ही हुआ है।

स्पेकट्रम-१८वें कन्या अधिवेशन का पूज्यप्रवर की सन्निधि में मंचीय कार्यक्रम

पूज्यप्रवर ने इस अवसर पर प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि तीन शब्द हैं—बुभुषा, जिज्ञासा, चिकीरसा। आदमी के जीवन में बुभुषा होनी चाहिए, कुछ होने की इच्छा होनी चाहिए। कुछ बनना है, तो जिज्ञासा हो। ज्ञान ग्रहण करने की इच्छा हो। चिकीरसा यानी कुछ बढ़िया काम करने की इच्छा होनी चाहिए। इन इच्छाओं के अनुसार आदमी प्रयत्न करता है, तो उसका एक सुंदर परिणाम भी आ सकता है।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने कहा कि कन्याओं को जीवन में सहिष्णुता का विकास करना होगा। परिवार, व्यवसाय या समाज कोई भी क्षेत्र हो वहाँ सहिष्णुता की अपेक्षा है। तलाक की समस्या इसलिए बढ़ रही है कि दोनों ओर सहिष्णुता का अभाव है। कन्याओं में सहिष्णुता के बीजों का वपन हो जाएगा तो समस्या अपने आप समाप्त हो जाएगी।

अखिल भारतीय महिला मंडल की राष्ट्रीय अध्यक्षा नीलम सेठिया ने इस अधिवेशन की विस्तार से जानकारी दी। कन्या मंडल से अर्चना भंडारी ने अपनी अभिव्यक्ति दी। कन्या मंडल की प्रस्तुति हुई।

मंचीय कार्यक्रम से पूर्व समणी जिज्ञासाप्रज्ञा जी एवं समणी कुसुमप्रज्ञा जी ने अपनी अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

वित्त सुरक्षा की अपेक्षा चारित्र रूपी वृत की सुरक्षा ज्यादा आवश्यक : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, ५ अगस्त, २०२२

संत शिरोमणी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में प्रश्न यह किया गया है कि भगवान! क्या एकांत बाल मरकर नरक, तिर्यंच, मनुष्य या देवगति में पैदा हो सकता है। एकांत बाल असंयमी होता है, वह मिथ्या दृष्टि हो सकता है और सम्यग्-दृष्टि भी हो सकता है। पहले चार गुणस्थानों में जो मनुष्य है, वे एकांत बाल होते हैं। क्षायिक सम्यक्त्व भी हो सकती है, परंतु व्रत-संयम नहीं है।

ये चार गुणस्थानों वाले मनुष्य हैं, ये नरक आदि चारों गति में पैदा हो सकते हैं। भगवान ने उत्तर भी यही दिया है कि नरक का आयुष्य या चारों गति में किसी भी गति का आयुष्य बाँधकर उस गति में पैदा हो सकते हैं। जो सम्यक्त्वी है, अव्रती है, वह उस अवस्था में आयुष्य बंध करेगा तो वह देवगति का ही करेगा। अन्य गति में नहीं जाएगा।

परंतु जो मिथ्यात्वी है, वह नरक, तिर्यंच, मनुष्य या देवगति में जा सकता है। इसी से जुड़ा प्रश्न है कि कोई एकांत पंडित मनुष्य है, वह नरक में, तिर्यंच में, मनुष्य में, देवगति में पैदा हो सकता है क्या? जो साधु है, कोई अव्रत नहीं है, उस साधु को एकांत पंडित कहा गया है। त्याग-विरति की अपेक्षा से उसे पंडित कहा गया है। एकांत पंडित है, वह अगली गति का आयुष्य बंध कर भी सकता है और नहीं भी कर सकता है।

एकांत पंडित मोक्ष में चले जाएँ तो अगली गति का बंध होगा ही नहीं। जो मोक्ष में नहीं जाएगा और एकांत पंडित है, वो न नरक गति का, न तिर्यंच गति का, न मनुष्य गति का आयुष्य बंध करेगा, एकांत वह देवगति में ही जाएगा।

जो बाल पंडित है, श्रावक है, पंचम गुणस्थान वाला है, वो मरकर कहाँ जाएगा? उत्तर दिया गया कि उस अवस्था में अगर आयुष्य बंध करेगा तो न नरक में, तिर्यंच में न मनुष्य गति में जाएगा, वह तो देवगति का आयुष्य बंध कर देवों में ही जाएगा। प्रश्न किया गया कि वह साधु तो है नहीं फिर और कहीं क्यों नहीं जाएगा? उसका कारण है कि वह बाल पंडित—श्रावक है, वह साधुओं के संपर्क में आता है। साधुओं के संपर्क में आकर उनके वचन सुनता है और वचन सुनकर वह त्याग-प्रत्याख्यान कर लेता है। एक सम्यक्त्वी जीव भी देवगति में पैदा होता है, तो फिर ये तो ऊँचा श्रावक है। सम्यक्त्व के साथ व्रत भी है। पाँचवें गुणस्थान वाला है।

बताया गया है कि एकांत बाल है, जो मिथ्यात्वी है, वो महा आरंभ करे तो वह नरक में पैदा हो सकता है। उन्मार्ग की देशना दे दे तो तिर्यंच गति में पैदा हो सकता है। कषाय की अल्पता है तो एकांत बाल मनुष्य गति में भी पैदा हो सकता है। अकाम निर्जरा करता है, तो देवगति में जा सकता है। पुनर्जन्म के संदर्भ में अनेक बातें आगमों में प्राप्त होती हैं।

श्रावक बाल पंडित होते हैं, श्रावक के मन में यह भावना रहे कि वह दिन धन्य होगा जब मैं साधु बनूँगा। घर-परिग्रह, परिवार को छोड़कर अणगार बन जाऊँ। जब तक साधु न बन सकूँ तब तक जितना हो सके त्याग-प्रत्याख्यान करने का प्रयास करूँ। श्रावक के बारह व्रतों को ग्रहण करने का प्रयास करूँ, जिससे मेरा अव्रत कम हो सके और आगे जाकर मुझे साधना स्वीकार करने का प्रयास हो। श्रावकत्व में रहते हुए भी त्याग-संयम को बढ़ाने का प्रयास करें। ताकि मोक्ष की दिशा में आगे बढ़ सकें।

व्यापार कार्य में ईमानदारी रखने का प्रयास करें। पारदर्शिता रहे, वृत्ति के साथ में धर्म को जोड़ दो। दो शब्द हैं—वृत्त और वित्त। वृत्त यानी चारित्र की संरक्षणपूर्वक सुरक्षा करनी चाहिए। वित्त तो आता है, चला जाता है। धन में कमी आ गई बड़ी बात नहीं है पर चरित्र में कमी आना बहुत बड़ी कमी जीवन में हो सकती है। चरित्र का संबंध तो आगे तक का है। गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी श्रावक की आत्मा बहुत ऊँची हो सकती है। शीघ्र ही वह मोक्षश्री का वरण करने वाला बन सकता है। (शेष पृष्ठ १४ पर)

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**